श्री राम जन्म कथा

STORY OF BIRTH OF LORD RAM

गोस्वामी तुलसी दास कृत श्री राम चरित मानस पर आधारित

Based on Shri Ram Charit Manas by Goswami Tulasi Das

संकलन: डॉ यतेंद्र शर्मा

Compilation: Dr Yatendra Sharma

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

श्री राम कथा संस्थान पर्थ उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

श्री राम जन्म कथा

STORY OF BIRTH OF LORD RAM

गोस्वामी तुलसी दास कृत श्री राम चरित मानस पर आधारित

Based on Shri Ram Charit Manas by Goswami Tulasi Das

संकलन

डॉ यतेंद्र शर्मा

COMPILATION

Dr. Yatendra Sharma

प्रकाशक

Publisher

श्री राम कथा संस्थान पर्थ, ऑस्ट्रेलिया, ६०२५

Shri Ram Katha Sansthan Perth, Australia, WA 6025

Website: https://shriramkatha.org

Email: srkperth@outlook.com

सौजन्य
COURTSEY

श्री ए आर कृष्णन
Shri A. R Krishnan

Perth Hindu Temple
Hindu Association of Western Australia

क्रमांक
Contents

वंदना 6
Vandana 6
श्री राम कथा महात्मय 9
Grandeur of the Story of Lord Ram 9
भगवान् राम जन्म हेतू 18
Purpose of the Birth of Lord Ram 18

वंदना
Vandana

ओं, ओं, ओं।
Om, Om, Om I

श्री गुरु वंदना Shri Guru Vandana

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

Gurur Brahma Gurur Vishnu Gurur Devo Maheshwaraha I
Guru Saakshaat Parambrahma Tasmai Shri Gurave Namaha I I

श्री गणेश वंदना Shri Ganesh Vandana

ओं श्री गणेशाय नमः।
ओं वक्रतुन्ड महाकाया, सूर्य कोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नम कुरू मे देव, शुभ कार्येशू सर्वदा ।।

Om Shri Ganeshay Namah I
Om VakraTund Maha Kaaya, Surya Koti Samaprabhah |
Nirvighnam Kuru Me Deva Shubh Kaaryessu Sarvadaa ||

श्री हनुमंत वंदना Shri Hanumant Vandana

ओं श्री हनुमंतए नमः।
अतुलित बलधामम नमामि, स्वर्ण शैलाभ देहम नमामि ।
दनुज बल कृषाणुम नमामि, ग्यानिनामग्रगणयम नमामि ।।
सकल गुणनिधानं नमामि, वानराणामधीशम नमामि ।
रघुपति प्रिय भक्तम नमामि, वात जातम नमामि ।।

Om Shri Hanumantaye Namah I
Atulit Baladhaamam Namaami, Swarn Shailaabha Deham Namaami I
Danuja Bal Krshaanum Namaami, Gyaninaamagraganyam Namaami I I
Sakala Gunnidhaanam Namaami, Vaanraannmadhiisham Namaami I
Raghupati Priya Bhaktam Namaami , Vaat a Jatmajam Namaami I I

श्री राम वंदना Shri Ram Vandana

ओं श्री श्रीरामचन्द्रए नमः।
श्रीरामचन्द्र कृपालु भजमन हरणभवभयदारुणं ।
नवकञ्जलोचन कञ्जमुख करकञ्ज पदकञ्जारुणं ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनीलनीरदसुन्दरं ।
पटपीतमानहु तडित रूचिशुचि नौमिजनकसुतावरं ॥
भजदीनबन्धु दिनेश दानवदैत्यवंशनिकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द्र दशरथनन्दनं ॥
शिरमुकुटकुण्डल तिलकचारू उदारुअङ्गविभूषणं ।
आजानुभुज शरचापधर सङ्ग्रामजितखरदूषणं ॥
इति वदति तुलसीदास शङ्करशेषमुनिमनरञ्जनं ।
ममहृदयकञ्जनिवासकुरु कामादिखलदलगञ्जनं ॥

Om Shri Ramchandraye Namah ।
Shriramchandra Kripalu Bhajumana, Haranabhavabhayadaarunam ।
Navakanjlochana Kanjamukh Karakan Padkanjaarunam ।।
Kandarp Aganit Amita Chavi Navneelneeradsundaram ।
Patapeetmaanahu Tarit Ruchisuchi Navmi Janaka Sutaavaram ।।
Bhajudeenabandhu Dinesh Daanavdaityavanshnikandam ।
Raghunand Aanandkand Kaushalachanda Dasharathnandanam ।।
Shirmukutakundala Tilakchaaru Udaaruangavibhushanam ।
Aajaanubhuj Sarchapadhar Sangraamjitkhardushnam ।।
Iti Vadati Tulsidaasa Shankarasheeshmunimanaranjanam ।
Mamhridayakanjanvaasakuru Kaamaadikhaladalaganjanam ।।

अथ श्री राम जन्म कथा Story of the Birth of Lord Shri Ram

कथा है ये त्याग की, निःस्वार्थ की, परमार्थ की ।
प्रभु प्रेम की, संतोष की, जीवन लक्ष्य प्राप्ति की ।
दूर करे सब व्यथा, अथ श्री राम जन्म कथा ।

सभी विपदाओं को दूर करने वाली, त्याग, निःस्वार्थ, परमार्थ, ईश्वर प्रेम, संतोष प्रदान करने वाली एवं जीवन के लक्ष्य को प्रदान करने वाली श्री राम कथा प्रारंम्भ होती है।

Kathaa Hai Ye Tyaag Ki, Nihswaarth Ki, Parmaart h Ki ।
Prabhu Prem Ki, Santosh Ki, Jeevan Lakashy Praapti Ki ।
Door Kare Sab Vyathaa, Ath Shri Ram Katha ।

We narrate the story of the birth of Lord Ram. This is the story of sacrifice, selflessness, charitable act, love of God, and getting satisfaction and objectives of the life. Reading or listening this holy story eradicates all the distresses and grievances of the life.

श्री राम कथा महात्मय
Grandeur of the Story of Lord Ram

मेरी (संकलन कर्ता की) एक प्रसिद्द कविता की पंक्ति है:

जीवन सम है विष अंगज, पी सम मीरा पा कृष्णज ।

'यह जीवन विष के समान है, लेकिन इसे मीरा सदृश्य पी, एवं कृष्ण (भगवान्) की प्राप्ति कर।'

संत कहते हैं, अवश्य यह विष तो अपने ही कृत्यों का परिणाम है, भुगतना ही पडेगा, पीना ही पडेगा, पर इस विष को अमृत कैसे बनाया जाय? भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज कहते थे कि इसमें राम जोड़ दिया जाय तो विष, विश्राम बन जाय - अर्थ शांति। भगवान् श्री राम की पवित्र कथा ही विश्राम (शांति) का साधन है।

गोस्वामी तुलसी दास जी भी यही कहते हैं।

बुध बिश्राम सकल जन रंजनि, रामकथा कलि कलुष बिभंजनि ।
रामकथा कलि पंनग भरनी, पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी ।।
रामकथा कलि कामद गाई, सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ।
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि, भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ।।

रामकथा पंडितों को विश्राम देने वाली, सब मनुष्यों को प्रसन्न करने वाली और कलियुग के पापों का नाश करने वाली है। रामकथा कलियुगरूपी साँप के लिए मोरनी है और विवेकरूपी अग्नि के प्रकट करने के लिए अरणि (मंथन की जाने वाली लकड़ी) है। रामकथा कलियुग में सब मनोरथों को पूर्ण करने वाली कामधेनु गौ है और सज्जनों के लिए सुंदर संजीवनी जड़ी है। पृथ्वी पर यही अमृत की नदी

है, जन्म-मरण रूपी भय का नाश करने वाली और भ्रम रूपी मेंढकों को खाने के लिए सर्पिणी है।

One of the verses of my (compiler) famous poetry is:

'The Life is Like a Poison, O My Son I
Drink It Like Meera and Attain Salvation I I

The saints say that this poison (Vish) in the life is due to our past deeds. We have no choice than to accept it and drink it. But how can we turn this poison into nectar? Bhagwan Swami Shri Ramanand Ji Maharaj used to say, add Ram to the Vish, so it becomes Vishram (Vish + Ram = Vishram), means 'Peace'. Narrating, reading and listening holy stories of Lord Ram is the means to attain Vishram (Peace).

Goswami Tulasi Das Ji also repeated the same words in Shri Ram Charit Manas.

Budha Bishraam Sakal Ja n Ranjani |
Ramkatha Kali Kalush Bibhanjani ||
Ram Katha Kali Panang Bharani |
Puni Bibek Pawak Pahun Arni ||
Ram Katha Kali Kaamad Gaiyee |
Sujan Sajeevani Muru Suhaayee ||
Soi Basudhaatal Sudha Tarangini |
Bhay Bhanjan Bhram Bhek Bhuangini ||

The story of Lord Rama is a solace to the learned and a source of delight to all men and wipes out the impurities of the kali age. This story is like a peacock to the snakes (poisons of this Kali Yug) and like a match stick to reveal the fire of conscience. This story will fulfil all the desires like

Kamndhenu (Desire fulfilling Mother Cow) cow. This is like a Sanjeevani Booti (the medicine which cured Shri Lakshman Ji) to all good gentlemen. This is the river of nectar on earth who destroys the fear of life and death. This holy story will take away all your sins in a similar way as a snake annihilates frogs.

लोग मुझ से (संकलन कर्ता से) अक्सर यह प्रश्न पूछते हैं। हम तो प्रतिदिन श्री राम का नाम किसी न किसी प्रकार लेते ही हैं, फिर भी हमें शांति क्यों नहीं मिलती? श्रुति ने इस का सरल उत्तर दिया है जिसे गोस्वामी तुलसी दास जी ने दोहराया है।

श्री राम कथा के कथन और श्रवण का शुभ फल किसे मिलता है, इस बारे में गोस्वामी जी कहते हैं जिन के हृदय में अपने माता, पिता एवं समस्त आयु एवं ज्ञान में बड़े नर नारीओं का सम्मान हो, वही राम कथा कथन और श्रवण के शुभ फल का उत्तराधिकारी है। बिना उनके आशीर्वाद के स्वप्न में भी राम प्राप्ति नहीं हो सकती, और बिना राम की प्राप्ति के यह विष, विश्राम नहीं बन सकता। स्वयं भगवान ने इसको चरित्र में ढाल के दिखाया है।

Of course, there is a pre-requisite to get the highest reward on chanting the name of the Lord and reading and listening Shri Ram Katha according to Shruti. The persons who have high regard to their parents and elders, get the reward of chanting the name of Lord Ram, and reading and listening Shri Ram Katha. One cannot attain peace and Godhead unless blessed by them. Lord Ram has demonstrated this in his life.

स्मरण कीजिए बालकांड। भगवान श्री राम अयोध्या के राजकुमार हैं। महामंत्री सुमंत जी उन्हें महाराज दशरथ का संदेश लेकर उनके महल में पहुँचते हैं। श्री सुमंत जी को देख भगवान उनके चरणों में नतमष्तक हो प्रणाम करते हैं। श्री सुमंत जी के नेत्रों में जल भर आता है। हे प्रिय राजकुमार, मैं तो आपका एक छोटा सा सेवक हूँ। एक सेवक के चरण स्पर्श करना एक राज कुमार के लिए अकल्पनीय है। भगवान तब प्रत्युत्तर देते हैं, 'काका (भगवान श्री राम सुमंत जी

को काका कहकर संबोधित करते थे), अगर आप के स्थान पर सम्राट दशरथ आए होते तो क्या मैं उनके चरण स्पर्श नहीं करता।

"वह तो आपके पिता हें, राजकुमार। उनके चरण स्पर्श करना तो आप का धर्म है" सुमंत जी बोले।

राजकुमार श्री राम फिर कहते हैं, "आप भी तो पित्र समान हें काका।"

सुमंत जी उनको हृदय से लगा लेते हें। इस सम्मान का परिणाम - एक राजकुमार राम, भगवान पुरुषोत्तम राम बन हम सब के पूज्यनीय हुए।

Let me take you to the Baal Kaand. Ram was the prince of Ayodhya. Chief Minister of his father king Dasharath Shri Sumant Ji visited his palace with a message from the king Dasharath. As soon as prince Ram saw Shri Sumant Ji coming to His room, He immediately got up from his seat, and welcomed Shri Sumant Ji by touching his feet. Tears started flowing from the eyes of Shri Sumant Ji. Shri Sumant Ji said, 'O prince, I am a small servant of your father king Dasharath and the kingdom of Ayodhya. Touching the feet of a servant does not seem magnifically to a prince.

Lord Ram replied, 'Kaakaa (uncle), (Lord Ram used to address Shri Sumant Ji as Kaakaa), if Chakravartee Maharaj king Dashrath Ji would have come to Me, would have I not touched his feet?

"He is your father, prince. Sure, it is your dharma (duty) to respect him and touch his feet." Said Shri Sumant Ji.

Lord Ram replied, "You are too like my father, Kaakaa".

Shri Sumant Ji immediately hugged Lord Ram and blessed Him with millions of blessings. The result of this blessing, prince Ram is honoured

even today as Lord (Bhagwan) Purushottam Shri Ram, and worshipped by the Universe.

अब दूसरी ओर एक और उदाहरण देखिए। मैं आपको सुंदरकांड में ले चलता हूँ। हनुमान जी को नागपाश में बाँधकर मेघनाथ रावण की सभा में ले आता है। सभी राक्षस हनुमान जी को प्राण दंड देने की रावण को सलाह देते हैं। यहाँ रावण के नाना मालयवंत जी इसके विरुद्ध सलाह देते हैं। वह कहते हैं कि दूत को मारना अनुचित है। रावण क्रोध मैं अपने ब्रद्ध नाना का अपमान करता है, उनका उपहास करता है। अपमानित हो मालयवंत जी सभा छोड़ अपने घर को प्रस्थान कर जाते हें। परिणाम - सोने की लंका का दहन और अंततः रावण के कुल का नाश। यह है बुजुर्गों के अपमान और उनकी अवमानना करके का परिणाम।

Now see another example. Let me take you to the Sundar Kaand. Lord Hanuman ji was chained by Meghnath (son of Raavan) using snakes as rope. Lord Hanuman Ji had destroyed his beautiful Ashok garden, and also killed his one of the sons, Akshay Kumar. The Senators of the court of Raavan pronounced death penalty to Lord Hanuman for this act. Raavan's maternal grandfather Shri Maalyvant Ji was also present in the court. He advised Raavan that killing a messenger was against the law of Dharma. Raavan got angry on this suggestion of his own grandfather and insulted him. He asked him to leave the court. The insulted Shri Maalywant Ji then left the court on his own will, and went to his home. The result of this insult to an elder by Raavan, we all now. His beautiful city Lanka was burnt to ashes by Lord Hanuman. Eventually, his whole clan was killed other than Shri Vibhishan ji, his younger brother, who took asylum in the lotus feet of the Lord Ram. This is the result of insulting elders.

गुरु देव एक कथा सुनाया करते थे। अब यह कथा सत्य है अथवा काल्पनिक, आप इस पर मत जाईए। इसका गूढ अर्थ समझने का प्रयास कीजिए।

श्री राम जन्म कथा STORY OF BIRTH OF LORD RAM

Gurudev used to narrate an interesting story. Whether this story is true or not, I do not know. However, it gives a great message, and perhaps that was the aim of Bhagwan Gurudev ji Maharaj.

एक संभ्रांत परिवार की कन्या को एक दूसरे गाँव के एक साधारण पुरुष से प्रेम हो गया। कन्या के पिता ने बहुत समझाया कि वह विवाह ना करे, परंतु कन्या नहीं मानी। तब पिता ने एक युक्ति सोची। ठीक है, विवाह अवश्य इसी लड़के के साथ होगा, परंतु मेरी दो शर्तें हैं। एक अभी कि बरात में कोई भी वृद्ध नहीं आएगा। दूसरी शर्त, जब बारात आ जाएगी तब मैं बताऊँगा। लड़के के घर संदेशा भेज दिया गया। बड़ी चर्चा हुई। सभी वृद्धों को बहुत बुरा लगा। लेकिन क्या करते, अपने बच्चे के आगे विवश थे, मान गये। लेकिन लड़के के नाना विफर गये। मैं तो अवश्य ही जाऊँगा। मैं अपना ऐसा श्रृंगार करूँगा कि कोई मुझे पहचान ही नहीं पाएगा। श्रृंगार किया। दूल्हे के रथ के कोचवान बने। जब बारात दुल्हन के ग्राम के समीप पहुँच गयी तो रथ से उतर गए और एक पेड़ के नीचे छिप गये। सोचा, जब फेरे होंगे तब चुपके से देखूँगा। अब जब बारात दुल्हन के ग्राम पहुँच गयी तो वधु के पिता ने दूसरी शर्त रख दी। गाँव के पास एक नदी बहती थी। कहा, इस नदी के निर्मल जल को शुद्ध दुग्ध से भर दो, तभी विवाह होगा। असंभव, यही सब युवा बारातियों ने कहा। बेचारा लड़का। क्या करता? बारात वापस जाने लगी। तब नाना जो छिपे हुए थे सामने आए और पूछा क्या हुआ? यह तुम बारात बिना दुल्हन के कैसे वापस ले जा रहे हो? उन्हें शर्त बतलाई गयी। तब नाना बोले, 'बस इतनी सी बात। जाओ वधु के पिता से कह दो, हमने दुग्ध का प्रबंध कर लिया है, वह बस नदी के निर्मल जल को खाली करा दें।'

संदेश सुनते ही वधु पिता ने कहा अवश्य ही बारात में कोई वृद्ध है। यह कोई युवा सोच ही नहीं सकता। यह तो अनुभव का प्रतीक है। वधु के पिता अब क्या करते? नदी के जल को खाली कराना तो संभव नहीं। विवाह हुआ। नाना जी प्रगट हुए। वधु के पिता ने उनसे क्षमा माँगी।

देखा आपने वृद्ध की सलाह का प्रमाण। अपने वृद्धों का सम्मान करें और सफलता आपके चरण चूमेगी।

A young lady from an elite family fell in love with a young ordinary man of another village. The father of the girl was against this marriage for the reasons best known to him. He tried to tell his daughter all cons of this matrimony, but girl would not listen. Then, the father thought of a strategy. He agreed to the marriage of his daughter with this young ordinary man of other village on two conditions. The first condition was that the marriage party would not be consisting of any elderly person. Only the young friends of the groom would be allowed. The second condition would be told by him only when the marriage party would arrive at the home town of the girl. This message was conveyed to the groom, who gladly accepted. Though groom accepted this condition, but the elders of his family were not happy on this condition which deprived them from participating in the marriage ceremony of their beloved child. However, looking at the sensitivity of the occasion, and seeing the love of their child to this girl, they agreed. But the maternal grandfather of the groom (Nana Ji) did not agree, and said that he would participate in marriage ceremony any way. Realising the situation, however, he agreed not to go openly but to go disguised as a coachman of a bullock-cart. When the marriage party arrived near the village of the girl, he dropped himself from the bullock cart and hid under a tree. He thought that he would observe marriage ceremony in the dark of the night silently and bless the couple quietly. The father of the bride was informed that the marriage party had arrived only with the youngsters. Father was happy, and then he declared his second condition. There was a river flowing near the village. He said that the river should be filled with fresh milk by the groom if he wants to marry his daughter. Impossible, how can a river be filled with fresh milk? The groom and his friends thought a lot, but found no way to carry out this task. They were very disappointed and had no choice now than to forget marrying this young lady and take back marriage party to their village. Grandfather saw the glooming faces of these youngsters, and asked the reason. The grandson then told all the story. 'O such a small matter and you idiots cannot resolve? Never mind, go and tell the father of the bride that we

have made all the arrangements to fill the river with fresh milk. However, there is one problem. The river has to be emptied first from its pure water. So, the father of the groom should make arrangements to empty the water of the river, and then we will fill the river with fresh milk,' said grandfather.

The message was immediately conveyed to the father of the bride. "Oh, sure there is an elderly man in the marriage party. These youngsters cannot have such a brain,' thought the father of the bride. He asked his spies to go and found out the truth. They could not find anyone because grandfather of the groom was present in the marriage party disguised as a coachman. The father of the bride had no choice now. He had no means to make the river empty of its pure water. The marriage was celebrated joyfully. After 'seven circumambulations' were completed, the grandfather appeared and blessed the couple. The father of the bride apologised to the grandfather of the groom, and with great respect offered his obeisance to him.

The moral of the story is that, if we respect our elders, success will touch our feet.

बुज़ुर्गों का आशीर्वाद मिल जाय, श्री राम कथा श्रवण हो जाए और राम कथा के द्वारा भगवान श्री राम को समर्पित हो जाएँ, तो फिर विष विश्राम बन ही जाएगा। और एक बार भगवान को समर्पित हो गये तो फिर अपनी ज़िम्मेदारी समाप्त। इस जीवन की नैया भगवान ही चलाएँ। जब भगवान हृदय में धारण हो जाते हैं तो संत पुरुष कहते हें कि इस दुनिया में रहते हुए हम कर्म अवश्य करते हें परंतु वह केवल अपनी ज़िम्मेदारीयों को निभाने के लिए। भगवान कृष्ण की श्रीमद्भागवद गीता में कही बात पूर्ण रूप से लागू होती है।

If we could get blessings from our elders and get the opportunity to read or listen Shri Ram Katha, thus devoting our life to the lotus feet of the Lord, then Vish (Poison) will become Vishram (Peace). Once the life is dedicated to the Lord, all responsibilities and duties end, and the persons

attain peace. The Lord then dwells in our heart. Though we live in this world, but carry out activities to fulfil our responsibilities only. We do not expect any materialistic result of our deeds. Lord Krishna has said in Shrimad Bhagwad Gita:

कर्मण्येवाधिकारस्त मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

कर्तव्य कर्म करनेमें ही तेरा अधिकार है, फलोंमें कभी नहीं। अतः तू कर्म फल का हेतु भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो।

Karmanye Vadhikarast Ma Phaleshou Kadachana I
Ma Karmaphalaheturbhurma Tey Sangostvaakarmani I I

Thy right is to work only, but never with its fruits; let not the fruits of action be thy motive, nor let thy attachment be to inaction.

भगवान् राम जन्म हेतू
Purpose of the Birth of Lord Ram

हम भगवान् श्री राम के जन्म के कारणों का विवेचन करेंगे।

भगवान् विष्णु के अवतार धारण करने का कारण कुछ और नहीं, परन्तु अपने भक्तों के विकारों को दूर करना, उनमें भक्ति का संचार करना, उनके कष्टों को निवारण करना, एवं उनके भगवद्प्रेम से मिलन की अभिलाषा को पूर्ण करना है।

We will discuss the purpose of the birth of Lord Ram.

The purpose of the incarnation of Lord Vishnu on this earth is only for eradicating the sins of His devotees, removing their troubles and develop their devotion. The Lord fulfils the desires of His devotees to attain salvation by taking incarnation in human form on this earth.

गोस्वामी जी कहते हैं कि भगवान् के जन्म के कारण केवल और केवल अपने भक्तों को सांसारिक कष्टों एवं आध्यात्मिकता में बाधा से मुक्ति कराना ही है। अब ये सांसारिक कष्ट अथवा आध्यात्मिक बाधाएं उत्पन्न क्यों होती हैं? मद, काम, क्रोध, और लोभ के कारण। जब भी भगवद-भक्तों में मद, काम, क्रोध और लोभ की भावना उत्पन्न हो जाती है तो भगवान् उसके हरण के लिए नर रूप धारण कर अपने भक्तों को इस से मुक्ति दिलाते हैं। इस के अतिरिक्त भगवद-प्रेम भी भगवान् के अवतार का कारण बनाता है। जब भी भगवद-भक्तों में भगवद-प्रेम इस पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है कि वह उन्हें प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं तो भगवान् इस धरती पर अवतार धारण करते हैं।

Goswami Tulasi Das Ji says that the very reason of the Lord to incarnate on the earth is to provide eternal happiness to His devotees by removing all the obstacles, whether materialistic or spiritual. Why these materialistic and spiritual hinderances are developed and responsible to take away

happiness? Goswami Ji says that when the four disorders (Vikaar), the arrogance, the desire of sensual pleasures, the wrath and the greed, are developed in the personality of a person, he/ she is led towards unhappiness. The Lord incarnates to guide to relinquish these four disorders from His devotees and give them salvation. Also, when the love and devotion of a devotee to the Lord reaches the climax and he desires to see (Darshan) the Lord physically, the Lord incarnates in human form to fulfil the desire of His devotees.

जब जब पृथ्वी पर धर्म का नाश होने लगता है, अधर्मी बढ़ जाते हैं और वह हर प्रकार से संतों को सताते हैं, तो उनका निर्वाण करने के लिए भी भगवान् इस पृथ्वी पर जन्म लेते हैं।

जब जब होई,धरम कै हानि । बाढ़हि असुर ,अधम अभिमानी ।।
करहि अनीति,जाई नहीँ बरनी । सिदही विप्र, धेनु सुर धरनी ।।
तब तब प्रभु धरि,विविध शरीरा । हरहों कृपा निधि,सज्जन पीरा ।।

जब जब धर्म का ह्रास होता है और नीच अभिमानी राक्षस बढ़ जाते हैं, और वे ऐसा अन्याय करते हैं कि जिसका वर्णन नहीँ हो सकता, तथा ब्राह्मण, गौ, देवता और पृथ्वी कष्ट पाते हैं, तब तब कृपा निधान प्रभु, भाँति भाँति के (दिव्य)शरीर धारण कर सज्जनों की पीड़ा हरते हैं।

ऐसा ही भगवान् श्री कृष्ण ने श्रीमद्भागवद्गीता में भी कहा है ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

हे भारत, जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब मैं अपने रूप को रचता हूँ (अर्थात साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ)। साधु

पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

Whenever there is decline of the religion, and irreligious people give troubles to the honest, religious and saintly people, the Lord incarnates on the earth in human form to eradicate them and give peace to His devotees. Goswami Tulasi Das Ji said,

Jab jab hoy dharam ki hani l Badhen asur adham abhimani l l
Tab tab prabhu dhar vividh sarira l Haray kripanidhi sajjan pira l l

Similarly, Lord Shri Krishna had said in Shrimadbhagwad Gita.

Yada yada hi dharmasy glanirbhavati bharat l
Abhyutthanamadharmasy tadatmanan srijamyahamh l l
Paritranaya sadhunam vinashaya cha dushkritam l
Dharma sansthapanarthaya sambhavami yuge yuge l l

O descendant of Bharata, whenever and wherever, there is a decline in religious practice and a predominant rise of irreligion takes place, at that time, I continue to descend Myself in every age for the upliftment of the good and virtuous, for the destruction of evil, and for the re-establishment of the natural law.

उपर्युक्त संकल्पों की रक्षा हेतु प्रभु इस पृथ्वी पर अनेक बार जन्म लेते हैं। उनके जन्म लेने का कोई एक ही विशेष कारण नहीं होता वरन अनेकों कारण हो सकते हैं। श्री राम चरित मानस में भगवान् श्री राम के जन्म हेतु कुछ कारणों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

To fulfil the objects as narrated above, the Lord incarnates on this earth from time to time. There is not just any one special reason for the incarnation of the Lord, there may be several reasons for that. Goswami Tulasi Das Ji has described in details few of the reasons of incarnation of the Lord Ram.

गोस्वामी जी भगवद-जन्म के कारणों में सर्व प्रथम भगवद-भक्त अथवा उनके सेवकों में मद अथवा अहंकार का कारण प्रस्तुत करते हैं। जब जब भगवान् के प्रिय भक्त एवं सेवकों में मद (अहंकार) का बीजारोपण हो गया तब तब भगवान् ने इस के हरण के लिए अवतार धारण किया।

Goswami Ji said that one of the most important reasons for the Lord to incarnate on the earth is to eradicate the feelings of arrogance among his devotees. Arrogance takes the person to the lowest status and becomes the reason of his/ her downfall. Arrogance is the gateway of the hell. The Lord loves His devotees and never allows to fall in such a pit. So, he descends on earth to remove arrogance from His devotees.

भगवान् विष्णु के दो अत्यंत प्रिय भक्त और सेवक थे, जय और विजय। यह दोनों उनके सुरक्षा अधिकारी थे। एक समय इन्हें अपने पद का अभिमान हो गया। सभी को अपने आगे तुच्छ समझने लगे। प्रभु का दरबार वैसे तो सभी संतों के लिए सदैव खुला रहता था, लेकिन ये अभिमानी उसी को प्रभु से मिलने देते जो इनकी विनती करता, इनके चरणों पर पड़ता।

नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

ऐसा कोई नहीं जिसे पद पाकर अभिमान न हो गया हो।

प्रभु को यह सहन नहीं था। चूँकि वह प्रभु का अत्यत सम्मान करते थे और उन्हें शिकायत का कोई अवसर नहीं देते थे, अतः प्रभु को स्वयं उन्हें दण्डित करना

असंभव हो गया था। उनके इस अभिमान का दंड देने के लिए प्रभु ने एक युक्ति सोची। उन्होंने अपनी साधना द्वारा सनक कुमारों को आमंत्रित किया।

Lord Vishnu loved His two great devotees, Jai and Vijay, who were His security chiefs. Once they became very arrogant. They considered themselves highly superior and all others trivial persons. Though Lord Vishnu was ever available for His devotees and saints, but these arrogant security chiefs will only allow those to have darshan of the Lord who will pray to them and touch their feets. Goswami Tulasi Das Ji said that:

Nahin koi as janmaa jag maanhee I
Prabhutaa paahi jaahi madi naaheen I I.

No one is born in the Universe who does not become arrogant after getting superior authority.

प्रभु का सन्देश जान ब्रह्मा जी के मानसपुत्र, सनक, सनन्दन, सनातन एवं सनतकुमार भगवान विष्णु के दर्शन हेतु बैकुण्ठधाम पहुँचे। जब वे भगवान विष्णु के साकेत धाम के द्वार पर पहुँचे तो जय और विजय नामक इन दो द्वारपालों ने उन्हें रोककर कहा कि इस समय भगवान विष्णु विश्राम कर रहे हैं, अतः वह लोग भीतर नहीं जा सकते।

On getting telepathic message from Lord Vishnu, the sons (Manas-Putra) of Lord Brahma, Sanak, Sanandan, Sanaatan and Sanat Kumar arrived in Baikunth Dhaam to see (Darshan) Him. When they arrived at the gate of the Baikunth Dham, these two chief security officers, Jay and Vijay, did not allow them to go inside and see the Lord. Jay and Vijay argued that Lord Vishnu was taking rest at that time, and no one was allowed to disturb Him. Hence, none of you might enter inside the Bikunth Dham.

यद्यपि वे चारों ऋषिगण अत्यधिक आयु के थे, किन्तु तप के प्रभाव से वे बालक दिखाई देते थे, इसी कारण जय और विजय उन्हें पहचान नहीं पाये।

Though these four Rishies were of matured age, but because of the effect of their penance, they looked like children. Jay and Vijay could not recognise and thought them as ordinary children.

सनत कुमारों ने बहुत प्रकार से जय और विजय को समझाने का प्रयास किया। यह भी बतलाया कि वह प्रभु की आज्ञा से ही उनसे मिलने आए हैं। लेकिन ये दोनों अभिमानी सुरक्षा अधिकारी, जय और विजय, तो अपनी ही हठ पर अड़े रहे।

The sons (Manas Putra) of the Lord Brahma tried all their ways in their humblest way to give an explanation to Jay and Vijay that they had come to see (darshan) the Lord on His invitation only. But the arrogant Jay and Vijay would not budge and continued their stubbornness. They did not allow these Rishies to enter into Baikunth Dham.

इतना समझाने के बाद भी जब जय और विजय ने उन्हें भगवान् विष्णु से मिलने अंदर नहीं जाने दिया तो ऋषिगणों ने क्रोधित होकर कहा, "अरे मूर्खों, हम भगवान विष्णु के भक्त हैं और भगवान विष्णु तो अपने भक्तों के लिए सदैव उपलब्ध रहते हैं। तुम दोनों अपनी कुबुद्धि के कारण हम लोगो को भगवान विष्णु के दर्शन से विमुख रखना चाहते हो। ऐसे कुबुद्धि वाले व्यक्ति विष्णुलोक में रहने के योग्य नहीं है। अतः हम तुम्हें श्राप देते हैं कि तुम दोनों का देवत्व समाप्त हो जाये और तुम दोनों भूलोक में जाकर पापमय योनियों में जन्म लेकर अपने पाप का फल भोगो।"

Though Rishies tried a lot to convince Jay and Vijay, but they would not listen. Then the Rishies lost their temper and cursed in anger, ‘O fools, both of you call yourselves as devotees of Lord Vishnu, but do not

understand that the doors of the Lord are always open to any of His devotee no matter how small or big he/ she is. You are keeping us away from seeing the Lord due to your wickedness. Such wicked people do not deserve to be inhabitants of Vishnu Dham. Hence, we curse you that your divine status be over immediately, and both of you take birth on earth as demons. Both of you then would reap the fruits of your ill-deeds there.'

द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ । जय और विजय जान सब कोऊ ।।
बिप्र श्राप तें दूनों भाई । तामस असुर देह तिन्ह पायी ।।

श्री हरि के जय और विजय दो प्यारे द्वारपाल हैं, जिनको सब कोई जानते हैं। उन दोनों भाईओं ने ब्राह्मण सनकादिक ऋषियों के श्राप वश तामसी शरीर पाया।

Dvārapāla hari kē priya dōū l Jaya aru bijaya jāna saba kōū ll
Bipra śrāpa tēṃ dūnau bhā l tāmasa asura dēha tinha pāī ll

Lord Vishnu has two favourite gate-keepers Jaya and Vijaya, who are known to everybody. Due to the curse of Brahmanas (Sanaka and his three brothers) both these brothers were born in the accursed species of demons.

सनकादिक ऋषियों के इस घोर श्राप को सुनकर जय और विजय भयभीत होकर उनसे क्षमा याचना करने लगे। इसी समय भगवान विष्णु भी वहाँ पर आ गये। जय और विजय भगवान विष्णु से प्रार्थना करने लगे कि वे ऋषियों से अपना श्राप वापस ले लेने का अनुरोध करें।

After hearing the terrible curse of the sons (Manas Putra) of Lord Brahma, Jay and Vijay fell at their feet and begged for their mercy. On hearing the noise, Lord Vishnu also appeared on the scene. Jay and Vijay now fell at the feet of Lord Vishnu and requested Him to please seek forgiveness of the great Rishies on their behalf so they could kindly reverse their curse.

भगवान विष्णु ने उन दोनों से कहा, "ऋषियों का श्राप कदापि व्यर्थ नहीं जा सकता। तुम दोनों को भूलोक में जाकर जन्म अवश्य लेना पड़ेगा। अपने अहंकार का फल भोग लेने के बाद तुम दोनों पुनः मेरे पास वापस आओगे। तुम दोनों के पास यहाँ वापस आने के लिए दो विकल्प है, पहला यह कि यदि तुम दोनों भूलोक में मेरे भक्त बन कर रहोगे तो सात जन्मों के बाद यहाँ वापस आओगे और दूसरा यह कि यदि भूलोक में जाकर मुझसे शत्रुता रखोगे तो तीन जन्मों के बाद तुम दोनों यहाँ वापस आओगे क्योंकि उन तीनों जन्मों में मैं ही तुम्हारा संहार करूँगा।"

Lord Vishnu then told to Jay and Vijay, 'the curse of the Great Rishies cannot be reversed. Both of you have to take birth on the earth as demons. You have to reap the fruit of your arrogance. However, after enduring the results, both of you will return to Saket Dham and get back to your present divine status. You may have one of the two choices for your return to Saket Dham. If you chose to take birth on the earth as my devotees, you have to take birth for seven lives. However, if you decide to take birth on the earth as my enemy, then you will get salvation only in three lives. So, tell me how you may like to endure the fruits of your curse?'

जय और विजय सात जन्मों तक पृथ्वीलोक में नहीं रहना चाहते थे इसलिए उन्होंने दूसरे विकल्प को मान लिया।

Jay and Vijay did not want to be away from Saket Dham for a long time. Hence, they did choose the second option, to born on earth as the enemy of the Lord Vishnu.

Lord Vishnu said, 'Tathastu (So it be). I promise both of you that in all your three lives, I will incarnate on the earth to give you salvation'.

यही जय और विजय भूलोक में सतयुग में अपने पहले जन्म में हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यपु, त्रेता युग में अपने दूसरे जन्म में रावण और कुम्भकर्ण तथा द्वापर में अपने तीसरे जन्म में शिशुपाल और दन्तवक्र बने।

Jay and Vijay thus had to take birth on the earth for three lives.

In their first lives, they were born as Hryanaksh and Hryanakashipu in Satyug. Hryanaksh was given salvation by the Lord Vishnu in Varaah incarnation. Hryanakashipu was given salvation by Narsinmavatar.

In their second lives, they were born as Ravan and Kumbhkaran in Treta era. Lord Vishnu incarnated in the form of Lord Ram to give salvation to both of them.

In their third lives, they were born as Shishupal and Dantvakra in Dwaapar era. Lord Vishnu in the form of Lord Krishna gave salvation to them.

हिरण्याक्ष को भगवान् ने वराह (सूअर) का शरीर धारण करके मारा। हिरण्यकश्यपु को नरसिंह रूप धारण कर वध किया और अपने भक्त प्रहलाद का सुन्दर यश फैलाया।

जय और विजय भूलोक में त्रेता युग में अपने दूसरे जन्म में रावण और कुम्भकर्ण बने और इनका वध करने के लिए भगवान् विष्णु ने नर शरीर धारण कर राम अवतार लिया।

यही जय विजय त्रेता युग में शिशुपाल एवं वक्रदन्त नाम से जन्मे जिन्हें भगवान् कृष्ण ने मुक्ति दी।

अब दूसरा उदाहरण भक्त के हृदय में काम और क्रोध जाग्रत होने पर उसके हरण हेतु अवतार का गोस्वामी जी ने प्रस्तुत किया है। सभी जानते हैं कि ब्रह्मऋषि

नारद जी भगवान् को हृदय से अत्यंत प्रिय हैं। जब उनके हृदय में काम की इक्षा उत्पन्न हुई और उसके पूर्ण न होने पर क्रोध उत्पन्न हुआ, तो उनके अपराध को स्वयं पर धारण कर भगवान् ने नररूप धारण किया।

Goswami Tulasi Das Ji gave another example of the reasons of the incarnation of Lord Ram on earth to annihilate the desire of lust and anger among His devotees. We all know that Brahmrishi Narad is very dear to Lord Vishnu. When a desire of lust developed into his heart was not fulfilled due to the intervention of Lord Vishnu, he cursed Him in anger to incarnate on earth as human being. Lord Vishnu accepted the curse of Brahmrishi and incarnated on the earth as Lord Ram.

नारद श्राप दीन्ह एक बारा । कलप एक तेहि लगि अवतारा ।।
गिरिजा चकित भईं सुनि बानी । नारद बिष्नु भगत पुनि ज्ञानी ।।
कारण कवन श्राप मुनि दीन्हा । का अपराध रमापति कीन्हा ।।
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी । मुनि मन मोह आचरज भारी ।।

एक बार नारद जी ने श्राप दिया, इस कारण भगवान् को नर रूप धारण करना पड़ा। यह सुनकर माँ भवानी चकित हो गयीं और बोलीं, 'प्रभु नारद जी तो विष्णु भक्त और महा ज्ञानी हैं। मुनि ने भगवान् को श्राप किस कारण दिया? हे पुरारी, यह कथा मुझ से कहिये। मुनि नारद के मन में मोह होना बड़े आश्चर्य की बात है।'

Nārada śrāpa dīnha ēka bārā I Kalapa ēka tēhi lagi avatārā II
Girijā cakita bhaī suni bānī I Nārada biṣnubhagata puni gyāni II
Kārana kavana śrāpa muni dīnhā I Kā aparādha ramāpati kīnhā II
Yaha prasaṃga mōhi kahahu purārī I Muni man moh ācaraj bhārī II

(Mahadev said) On one occasion Brahmrishi Narad cursed the Lord. This also became a reason of His birth in one particular time. Girija was taken aback to hear these words and said, "Narad is a votary of God Vishnu and

enlightened soul too. How could the great Sage curse his own God? What offence did Lord Vishnu committed against him? Tell me the whole story, O Lord Shiv. It is very strange that the Sage should have fallen a prey to delusion."

भगवान् शिव शंकर बोले, 'देवर्षि नारद को एक बार इस बात का घमंड हो गया था कि कामदेव भी उनकी तपस्या और ब्रह्मचर्य को भंग नहीं कर सके।'

'हिमालय पर्वत में एक बड़ी पवित्र गुफा थी। उसके समीप ही सुंदर गंगाजी बहती थीं। वह परम पवित्र सुंदर आश्रम देखने पर नारद जी के मन को बहुत ही सुहावना लगा। पर्वत, नदी और वन के (सुंदर) विभागों को देखकर नादर जी का लक्ष्मीकांत भगवान के चरणों में प्रेम हो गया। भगवान का स्मरण करते ही उन (नारद मुनि) के श्राप की (जो श्राप उन्हें दक्ष प्रजापति ने दिया था और जिसके कारण वे एक स्थान पर नहीं ठहर सकते थे) गति रुक गई और मन के स्वाभाविक ही निर्मल होने से उनकी समाधि लग गई। नारद मुनि की (यह तपोमयी) स्थिति देखकर देवराज इंद्र डर गया। उसने कामदेव को बुलाकर उसका आदर सत्कार किया (और कहा कि) मेरे (हित के) लिए तुम अपने सहायकों सहित (नारद की समाधि भंग करने को) जाओ। (यह सुनकर) मीनध्वज कामदेव मन में प्रसन्न होकर चला। इन्द्र के मन में यह डर हुआ कि देवर्षि नारद मेरी पुरी (अमरावती) का राज्य चाहते हैं। जगत में जो कामी और लोभी होते हैं, वे कुटिल कौए की तरह सबसे डरते हैं, जैसे मूर्ख कुत्ता सिंह को देखकर सूखी हड्डी लेकर भागे और वह मूर्ख यह समझे कि कहीं उस हड्डी को सिंह छीन न ले, वैसे ही इन्द्र को (नारदजी मेरा राज्य छीन लेंगे, ऐसा सोचते) लाज नहीं आई। तब कामदेव उस आश्रम में गया जहां ब्रह्मऋषि नारद साधना में लीन थे। उसने अपनी माया से वहाँ वसन्त ऋतु को उत्पन्न किया। तरह-तरह के वृक्षों पर रंग-बिरंगे फूल खिल गए। उन पर कोयलें कूकने लगीं और भौंरे गुंजार करने लगे। तीन प्रकार की (शीतल, मंद और सुगंध) सुहावनी हवा चलने लगी। रम्भा आदि नवयुवती देवांगनाएँ, जो सब की सब कामकला में निपुण थीं, वह बहुत प्रकार की तानों की तरंग के साथ गाने लगीं और हाथ में गेंद लेकर नाना प्रकार के खेल खेलने लगीं। कामदेव अपने इन सहायकों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और फिर उसने नाना प्रकार के मायाजाल

किए। परन्तु कामदेव की कोई भी कला मुनि पर असर न कर सकी। तब तो पापी कामदेव अपने ही (नाश के) भय से डर गया। लक्ष्मीपति भगवान जिसके बड़े रक्षक हों, भला, उसकी सीमा (मर्यादा) को कोई दबा सकता है? तब अपने सहायकों समेत कामदेव ने बहुत डरकर और अपने मन में हार मानकर बहुत ही आर्त (दीन) वचन कहते हुए मुनि के चरणों को जा पकड़ा। ब्रह्मऋषि नारद जब साधना से उठे, तब उन्होंने कामदेव को अपने चरणों में क्षमा माँगते हुए देखा। नारदजी के मन में कुछ भी क्रोध न आया। उन्होंने प्रिय वचन कहकर कामदेव का समाधान किया। तब मुनि के चरणों में सिर नवाकर और उनकी आज्ञा पाकर कामदेव अपने सहायकों सहित लौट गया।

देवराज इन्द्र की सभा में जाकर उसने मुनि की सुशीलता और अपनी करनी कही, जिसे सुनकर सबके मन में आश्चर्य हुआ और उन्होंने मुनि की बड़ाई करके श्री हरि को सिर नवाया। तब नारद जी शिव जी के पास गए। उनके मन में इस बात का अहंकार हो गया था कि उन्होंने कामदेव को जीत लिया। उन्होंने कामदेव के चरित्र शिवजी को सुनाए और महादेवजी ने उन (नारदजी) को अत्यन्त प्रिय जानकर (इस प्रकार) शिक्षा दी, 'हे मुनि, मैं तुमसे बार-बार विनती करता हूँ कि जिस तरह यह कथा तुमने मुझे सुनाई है, उस तरह श्री हरि को कभी मत सुनाना। चर्चा भी चले तब भी इसको छिपा जाना।'

यह महादेव की सलाह ब्रह्मऋषि नारद को अच्छी नहीं लगी। उन्होंने हृदय में विचार किया की यह तो मेरी बड़ी उपलब्धि है, मैं श्री हरि को क्यों न बताऊँ?

इसके बाद नारद भगवान विष्णु के पास गए और शिवजी के समझाने के बाद भी उन्होंने श्री हरि को पूरा प्रसंग सुना दिया। नारद भगवान विष्णु के सामने भी अपना घमंड प्रदर्शित कर रहे थे।

तब भगवान ने सोचा कि नारद का घमंड तोड़ना होगा। यह शुभ लक्षण नहीं है। तब श्री हरि ने अपनी माया का विस्तार किया।

श्री राम जन्म कथा STORY OF BIRTH OF LORD RAM

जब नारद कहीं जा रहे थे, तब रास्ते में उन्हें एक बहुत ही सुंदर नगर दिखाई दिया, जहां किसी राजकुमारी के स्वयंवर का आयोजन किया जा रहा था। नारद भी वहां पहुंच गए और राजकुमारी को देखते ही मोहित हो गए। यह सब भगवान श्री हरि की माया ही थी।

राजकुमारी का रूप और सौंदर्य नारद के तप को भंग कर चुका था। इस कारण उन्होंने राजकुमारी के स्वयंवर में हिस्सा लेने का मन बनाया। नारद भगवान विष्णु के पास गए और कहा कि आप अपना सुन्दर रूप मुझे दे दीजिए जिससे कि वह राजकुमारी स्वयंवर में मुझे ही पति रूप में चुने। भगवान ने ऐसा ही किया। लेकिन जब नारद मुनि स्वयंवर में गए तो उनका मुख वानर के समान हो गया। उस स्वयंवर में भगवान शिव के दो गण भी थे। वह यह सभी बातें जानते थे, और ब्राह्मण का वेष बनाकर यह सब देख रहे थे।

जब राजकुमारी स्वयंवर में आईं तो बंदर के मुख वाले नारद जी को देखकर बहुत क्रोधित हुईं। उसी समय भगवान विष्णु एक राजा के रूप में वहां आए। सुंदर रूप देखकर राजकुमारी ने उन्हें अपने पति के रूप में चुना लिया। यह देखकर शिवगण नारद जी की हंसी उड़ाने लगे और कहा कि पहले अपना मुख दर्पण में देखिए। जब नारदजी ने अपना चेहरा वानर के समान देखा तो उन्हें बहुत क्रोध आया। नारद मुनि ने उन शिवगणों को राक्षस योनी में जन्म लेने का श्राप दे दिया।

शिवगणों को श्राप देने के बाद नारदजी भगवान विष्णु के पास गए और क्रोधित होकर उन्हें बहुत भला बुरा कहने लगे। माया से मोहित होकर नारद मुनि ने श्री हरि को श्राप दिया, 'जिस तरह आज मैं स्त्री के लिए व्याकुल हो रहा हूं, उसी प्रकार मनुष्य जन्म लेकर आपको भी स्त्री वियोग सहना पड़ेगा। उस समय वानर ही तुम्हारी सहायता करेंगे।'

भगवान विष्णु ने कहा, 'ऐसा ही हो' और नारद मुनि को माया से मुक्त कर दिया। तब नारद मुनि को अपने कटु वचन और व्यवहार पर बहुत ग्लानि हुई और उन्होंने भगवान श्री हरि से क्षमा मांगी।

भगवान श्रीहरि ने कहा कि ये सब मेरी ही इच्छा से हुआ है अत: तुम शोक न करो। उसी समय वहां भगवान शिव के गण ही आ गए जिन्हें नारद मुनि ने श्राप दिया था। उन्होंने नारद मुनि से क्षमा मांगी। तब नारद मुनि ने उन्हें क्षमा करते हुए कहा कि तुम दोनों राक्षस योनी में जन्म लेकर सारे विश्व को जीत लोगे, तब भगवान विष्णु मनुष्य रूप में तुम्हारा वध करेंगे और तुम्हारा कल्याण होगा।

Lord Shiv then narrated the story to Parvati.

Once Brahmrishi Narad was influenced by pride. He thought that he is a Mahayogi. Even Kamdev could not influence him.

In the Himalaya mountains, there was a most sacred cave. The beautiful heavenly stream of Ganga was flowing nearby. The sight of this most holy and charming hermitage highly attracted the mind of the celestial Sage Narada. Seeing the mountain, the river and the forest glades, his heart developed love for the feet of Lord Vishnu. The thought of the Lord broke the spell of the curse pronounced by Daksa (that did not allow him to stay at one place). His pure and sinless mind fell into a trance. Seeing the Sage's condition, Indra became apprehensive. Summoning Lord Kamdev (the God of love), he instructed him to break this penance of Brahmrishi. Kamdev tried his best but could not break his penance. Then, in dire dismay, he acknowledged his defeat and fell at the feet of Brahmrishi Narad with deep humility.

Brahmrishi Narad did not become angry on trying to break his penance by Kamdev. He forgave him. However, Brahmrishi Narad became proud of his achievement. He wanted to tell his glory to his beloved friend, the great Lord Shiva. He reached Kailash, the abode of the Lord Shiva, and narrated Him the whole tale. Lord Shiva listened the whole story attentively, and then advised Brahmrishi. "O Sage, I request you never to

repeat this story to Lord Vishnu. Even if the topic ever comes up before Him, please hush it up."

Brahmrishi was not pleased with this advice of Lord Mahadev. He thought that this is his great achievement. Why should he not narrate this story to the Lord?

Ignoring the advice of Lord Shiva, he went to the abode of Lord Vishnu. Lord Vishnu rose to greet him with great joy and shared His seat with the Sage, and said with a smile, "It is after a long time that you have showered Me this favor, Brahmrishi."

Brahmrishi Narada then told the whole story to Lord Vishnu on his achievement that how he did win over Lord Kamdev.

With an impassive look, yet in coaxing accents, said the Lord, "By your very thought self-delusion, lust, arrogance and pride disappear. O Brahmrishi, you are steadfast in your vow of celibacy and resolute of mind. Sure, you can never be smitten with Kamdev."

Brahmrishi Narad replied with a feeling of pride, "Lord, it is all due to Your grace."

The compassionate Lord pondered and saw that a huge tree of pride had sprouted in his heart.

Lord Vishnu thought in His mind, 'I should tear this pride of Brahmrishi.. It is My vow to serve the best interest of My devotees. I must come out with a plan which may do good to the Sage.'

Bowing his head at the feet of Lord Vishnu, Brahmrishi Narad departed. The pride in his heart had swelled. The Lord, then, set up His Maya.

The Lord created a city with an area of eight hundred square miles in the way of Brahmrishi Narad. The manifold architectural beauties of that city excelled even those of Lord Vishnu's own abode Vaikuntha. It was inhabited by graceful men and women. A king, Silanidhi by name, ruled over that city. He had the most beautiful daughter, Vishvamohini. The princess was about to marry by Swaymvaram (self-choice), hence Silanidhi invited all the kings from Universe to take part in Swyamvaram. When Brahmrishi Narad entered this city, he inquired about the celebration. Hearing all that had been going on there, he went to the palace. The king paid his respect to him. The king then asked his daughter to bow to Brahmrishi, and said, "O Great Rishi, you are omniscient. Please tell me the future of this girl."

Brahmrishi was smitten with the beauty of the girl and said, 'the one who will wed this girl, will be immortal. No one will ever be able to conquer him in battle. He will be loved by the entire Universe."

Brahmrishi Narada then left the place with a desire to wed this princess. He thought in his heart that only Lord Vishnu can help him in this difficult hour. So, he started praying Him to come to his rescue. The merciful Lord Vishnu appeared before him.

Brahmrishi Narad fell at His feet, and humbly requested, "O Lord, be gracious to me and be good enough to help me. Bestow on me Your own beauty so this princess Vishwmohini marries me.'

The Lord smiled and said, 'O Brahmrishi, I will surely do the needful which is good to you. My words can never be untrue'.

After that, the Lord disappeared. Brahmrishi Narad then arrived at the Swaymwaram. He thought within himself that his beauty is so surpassing

that the princess will never commit the error of choosing for her husband anyone else than him.

Lord gave him a form of monkey. But no one other than Vishwmohini could see Brahmrishi as monkey. Others saw him in his original form as Brahmrishi Narad and greeted him with great respect. Two of Lord Shiva attendants too happened to be there disguised as Brahmins. With the power of Lord Shiva, they could also see the real form of Brahmrishi Narad as monkey.

Vishwmohini did not even look at Brahmirishi Narad. Lord Vishnu too arrived in Swamvaram, and the princess joyfully placed the necklace of the flowers on the Lord Vishnu, and thus wedded Him.

Brahmrishi Narad felt much perturbed. He felt as if a gem had dropped from a loosened knot in the end of his garment. The attendants of Lord Shiva then smilingly said, "O Brahmrishi, just look at your face in a mirror."

Uttering these words both ran away with fear of curse of Brahmrishi Narad. Then, Sage looked at his reflection in water. His fury knew no bounds when he saw his form. He then first cursed the attendants of Lord Shiva, 'O you sinful impostors, go and be reborn as demons. You mocked me, therefore, reap its reward.'
When he looked again in water, he saw that he had regained his real form. Yet his heart found no solace. His lips quivered and he was very angry to the Lord. He murmured, either he would curse Him or die at His door.

Lord Vishnu met him right on the way. He was accompanied by Goddess Lakshmi and the princess Vishwamohini. The Lord spoke to Brahmrishi, 'O Brahmrishi, why are you in so much anger and where are you going?'

Listening these words of Lord, Brahmrishi Narada was filled with rage. He said, 'O Vishnu, You cannot bear to look upon the good fortune of others. You are richly endowed with jealousy and fraud. While churning the ocean, You gave poison to Lord Shiva and took nectar for yourself. You have ever been selfish and perverse, and treacherous in Your dealings. You are absolutely independent and subordinate to none, therefore, You do whatever pleases You. You have this time played with fire and shall reap what You have sown. You made me look like a monkey, remember these monkeys will be your friends in your reincarnation as human being. As You have grievously wronged me on suffering of separation from my beloved, so shall You suffer the separation from Your beloved wife on your next incarnation.'

Gladly accepting the curse, the compassionate Lord praised Brahmrishi and withdrew the irresistible charm of His Maya.

When Lord lifted the spell of His Maya, there was neither Mother Lakshmi nor the princess Vishwamohini to be seen by His side. Brahmrishi understood all the happenings now. Sage then clasped the feet of Lord and said, "O Lord, save me. Let my curse prove ineffectual."

'Do not worry about this Brahmrishi. It all happened due to My will," replied the Lord.

Then, Bhramrishi replied, 'O Lord, I abused You so much. How will my sins be forgiven?'

Lord replied, 'Go and pray Lord Shankara. He will give you peace. No one is so dear to Me as Lord Shiva. O Sage, he who does not love and pray Lord Shiva, shall never attain true devotion to Me..I assure you that now My Maya shall not haunt you anymore.'

Having thus reassured the Sage, Lord then disappeared. Brahmrishi Narada then proceeded to Satyaloka chanting the name of Lord Shiva.

When the attendants of Lord Shiva saw the Sage moving along free from delusion and greatly delighted at heart, they approached him in great alarm an, clasping his feet, spoke to him in great humility, "We are the servants of Lord Shiva and no Brahmins, O great Sage. We have committed a great sin and have reaped its fruit. Now please rid us of your curse benevolent Sage.

Brahmrishi Narada was now full of compassion to the humble servants of Lord Shiva and replied, "Both of you go and take the form of the demons. You shall possess an enormous fortune, grandeur and strength. When Lord Vishnu takes a human form, you will die at His hands in battle and be liberated. You will not reborn then."

Bowing their heads at the Sage's feet, both departed and were reborn as demons in due course.

This was also one of the reasons why Lord Vishnu reincarnated in a human form.

अब गोस्वामी जी ने तीसरा कारण अपने भक्त में लोभ उत्पन्न होने पर उसके विनाश परिणाम स्वरुप राक्षस्ता प्रदान होने पर उसके उद्धार हेतु नर अवतार धारण करना बताया है। महाराज प्रतापभानु भगवद भक्त और सभी गुणों से संपन्न थे। भगवान् ने उन्हें ऐश्वर्यता, धन-धान्य एवं सर्व संपन्न राज्य का सम्राट बना रखा था, लेकिन उनके ह्रदय में अजन्मा, अजेता एवं सर्व-विजेता होने का लोभ जाग्रत हो गया जो उनके विनास का कारण बना। उनके उद्धार के लिए भी भगवान् ने मनुज रूप धारण किया।

Goswami Ji also described another reason of birth of Lord Ram in human form in Shri Ram Charit Manas. This was to provide salvation to one of

His devotees, king Pratapbhanu, who was fallen due to greed, and had to take birth as a demon because of the curse of Brahmins. King Pratapbhanu was a pious king and great devotee of the Lord Vishnu. Somehow, he developed a greed in his heart to become immortal and invincible. Lord Ram killed him and gave him salvation during Lanka war.

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी। जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥
बिस्व बिदित एक कैकय देसू। सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू ॥

हे मुनि, वह पवित्र और प्राचीन कथा सुनो, जो शिवजी ने पार्वती से कही थी। संसार में प्रसिद्ध एक कैकय देश है। वहाँ सत्यकेतु नाम का राजा रहता (राज्य करता) था। उसके दो वीर पुत्र हुए, जो सब गुणों के भंडार और बड़े ही रणधीर थे।

Sunu muni kathā punīta purānī l jō girijā prati saṃbhu bakhānī l l
Bisva bidita ēka kaikaya dēsū l satyakētu tahaom basai narēsū l l

Maharishi Yagyvalkya Ji told to Maharishi Bhardwaj Ji, 'Listen, O Sage, to an old and sacred legend story which was narrated by Lord Sambhu to Girija. There was a kingdom known by the name of Kaikaya, which was celebrated throughout the world. A king named Satyaketu ruled there.

राज्य का उत्तराधिकारी जो बड़ा लड़का था, उसका नाम प्रतापभानु था। दूसरे पुत्र का नाम अरिमर्दन था, जिसकी भुजाओं में अपार बल था और जो युद्ध में (पर्वत के समान) अटल रहता था। राजा का हित करने वाला और शुक्राचार्य के समान बुद्धिमान धर्मरुचि नामक उसका मंत्री था। इस प्रकार बुद्धिमान मंत्री और बलवान तथा वीर भाई के साथ ही स्वयं राजा भी बड़ा प्रतापी और रणधीर था। राजा अर्थ, धर्म और काम आदि के सुखों का समयानुसार सेवन करता था। राजा प्रतापभानु का बल पाकर भूमि सुंदर कामधेनु (मनचाही वस्तु देने वाली) हो गई। (उनके राज्य में) प्रजा सब (प्रकार के) दुःखों से रहित और सुखी थी और सभी स्त्री-पुरुष सुंदर और धर्मात्मा थे। वेदों में राजाओं के जो धर्म बताए गए हैं, राजा

सदा आदरपूर्वक और सुख मानकर उन सबका पालन करता था। प्रतिदिन अनेक प्रकार के दान देता और उत्तम शास्त्र, वेद और पुराण सुनता था। वह ज्ञानी राजा कर्म, मन और वाणी से जो कुछ भी धर्म करता था, सब भगवान वासुदेव को अर्पित करते रहता था। एक बार वह राजा एक अच्छे घोड़े पर सवार होकर शिकार का सब सामान सजाकर विंध्याचल के घने जंगल में गया और वहाँ उसने बहुत से उत्तम उत्तम हिरन मारे। राजा ने वन में फिरते हुए एक सूअर को देखा। उसने सूअर को ललकारा कि अब तेरा बचाव नहीं हो सकता। सूअर बहुत दूर ऐसे घने जंगल में चला गया, जहाँ हाथी घोड़े का गमन नहीं था। राजा बिलकुल अकेला था और वन में क्लेश भी बहुत था, फिर भी राजा ने उस पशु का पीछा नहीं छोड़ा। राजा को बड़ा धैर्यवान देखकर, सूअर भागकर पहाड़ की एक गहरी गुफा में जा घुसा। उसमें जाना कठिन देखकर राजा को बहुत पछताकर लौटना पड़ा, पर उस घोर वन में वह रास्ता भूल गया। बहुत परिश्रम करने से थका हुआ और घोड़े समेत भूख-प्यास से व्याकुल राजा नदी तालाब खोजता खोजता पानी बिना बेहाल हो गया। वन में फिरते-फिरते उसने एक आश्रम देखा। वहाँ कपट से मुनि का वेष बनाए एक राजा रहता था, जिसका देश राजा प्रतापभानु ने छीन लिया था और जो सेना को छोड़कर युद्ध से भाग गया था। प्रतापभानु का समय (अच्छे दिन) जानकर और अपना कुसमय (बुरे दिन) अनुमान कर उसके मन में बड़ी ग्लानि हुई। इससे वह न तो घर गया और न अभिमानी होने के कारण राजा प्रतापभानु से ही मिला (मेल किया)। दरिद्र की भाँति मन ही में क्रोध को मारकर वह राजा तपस्वी के वेष में वन में रहता था। राजा (प्रतापभानु) उसी के पास गया। उसने तुरंत पहचान लिया कि यह प्रतापभानु है। राजा प्यासा होने के कारण व्याकुलता में उसे पहचान न सका। सुंदर वेष देखकर राजा ने उसे महामुनि समझा और घोड़े से उतरकर उसे प्रणाम किया, परन्तु बड़ा चतुर होने के कारण राजा ने उसे अपना नाम नहीं बताया।

नदी के पवित्र जल में स्नान कर राजा की सारी थकावट मिट गई। राजा सुखी हो गया। तब तपस्वी उसे अपने आश्रम में ले गया और सूर्यास्त का समय जानकर उसने राजा को बैठने के लिए आसन दिया। फिर वह तपस्वी कोमल वाणी से बोला, 'तुम कौन हो? सुंदर युवक होकर जीवन की परवाह न करके वन में अकेले

क्यों फिर रहे हो? तुम्हारे चक्रवर्ती राजा के से लक्षण देखकर मुझे बड़ी दया आती है।'

राजा ने कहा, 'हे मुनिश्वर, सुनिए, प्रतापभानु नाम का एक राजा है, मैं उसका मंत्री हूँ। शिकार के लिए फिरते हुए राह भूल गया हूँ। बड़े भाग्य से यहाँ आकर मैंने आपके चरणों के दर्शन पाए। हमें आपका दर्शन दुर्लभ था, इससे जान पड़ता है कुछ भला होने वाला है।

मुनि ने कहा, 'हे तात, अँधेरा हो गया है। तुम्हारा नगर यहाँ से सत्तर योजन पर है। हे सुजान, सुनो, घोर अँधेरी रात है। घना जंगल है। रास्ता सरल नहीं है। ऐसा समझकर तुम आज यहीं ठहर जाओ। सबेरा होते ही चले जाना।

'हे नाथ, बहुत अच्छा', ऐसा कहकर और उसकी आज्ञा सिर चढ़ाकर घोड़े को वृक्ष से बाँधकर राजा बैठ गया। राजा ने उसकी बहुत प्रकार से प्रशंसा की और उसके चरणों की वंदना करके अपने भाग्य की सराहना की। फिर सुंदर कोमल वाणी से कहा, 'हे प्रभो, आपको पिता जानकर मैं ढिठाई करता हूँ। हे मुनिश्वर, मुझे अपना पुत्र और सेवक जानकर अपना नाम (धाम) विस्तार से बतलाइए।'

राजा ने उसको नहीं पहचाना, पर वह राजा को पहचान गया था। राजा तो शुद्ध हृदय था और वह कपट करने में चतुर था। एक तो वैरी, फिर जाति का क्षत्रिय, फिर राजा। वह छल बल से अपना काम बनाना चाहता था। वह शत्रु अपने राज्य सुख को समझ करके (स्मरण करके) दुःखी था। उसकी छाती कुम्हार के आँवे की आग की तरह भीतर ही भीतर सुलग रही थी। राजा के सरल वचन कान से सुनकर, अपने वैर को यादकर वह हृदय में हर्षित हुआ। वह कपट में डुबोकर बड़ी युक्ति के साथ कोमल वाणी बोला, 'अब हमारा नाम भिखारी है क्योंकि हम निर्धन और अनिकेत (घर-द्वारहीन) हैं।'

राजा ने कहा, 'आप जो हों सो हों, मैं आपके चरणों में नमस्कार करता हूँ। हे स्वामी, अब मुझ पर कृपा कीजिए।'

कपटी मुनि तब बोला, 'हे भाई, हमारा नाम एकतनु है।'

यह सुनकर राजा ने फिर सिर नवाकर कहा, 'मुझे अपना अत्यन्त अनुरागी सेवक जानकर अपने नाम का अर्थ समझाकर कहिए।'

कपटी मुनि ने कहा, 'जब पहले सृष्टि उत्पन्न हुई थी, तभी मेरी उत्पत्ति हुई थी। तबसे मैंने फिर दूसरी देह नहीं धारण की। इसी से मेरा नाम एकतनु है।'

राजा यह मीठी बातें सुनकर उस तपस्वी के वश में हो गया और तब वह उसे अपना नाम बताने लगा।

तपस्वी ने कहा, 'राजन, मैं तुमको जानता हूँ। तुमने कपट किया, वह मुझे अच्छा लगा। हे राजन्, सुनो, ऐसी नीति है कि राजा लोग जहाँ-तहाँ अपना नाम नहीं बताते। तुम्हारी वही चतुराई समझकर तुम पर मेरा बड़ा प्रेम हो गया है। तुम्हारा नाम प्रतापभानु है, महाराज सत्यकेतु तुम्हारे पिता थे। हे राजन्, गुरु की कृपा से मैं सब जानता हूँ, पर अपनी हानि समझकर कहता नहीं।'

राजा बोले, 'हे दयासागर मुनि, आपके दर्शन से ही चारों पदार्थ (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) मेरी मुट्ठी में आ गए, तो भी स्वामी को प्रसन्न देखकर मैं यह दुर्लभ वर माँगकर क्यों न शोकरहित हो जाऊँ। मेरा शरीर वृद्धावस्था, मृत्यु और दुःख से रहित हो जाए। मुझे युद्ध में कोई जीत न सके और पृथ्वी पर मेरा सौ कल्पतक एकछत्र अकण्टक राज्य हो।'
तपस्वी ने कहा, 'हे राजन्, ऐसा ही हो। पर एक बात कठिन है, उसे भी सुन लो। हे पृथ्वी के स्वामी, केवल ब्राह्मण कुल को छोड़ काल भी तुम्हारे चरणों पर सिर नवाएगा। हे नरपति, यदि तुम ब्राह्मणों को वश में कर लो, तो ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी तुम्हारे अधीन हो जाएँगे।'

राजा उसके वचन सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा, 'हे स्वामी, मेरा नाश अब नहीं होगा। हे कृपानिधान प्रभु, आपकी कृपा से मेरा सब समय कल्याण होगा।'

'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) कहकर वह कुटिल कपटी मुनि फिर बोला, 'तुम मेरे मिलने तथा अपने राह भूल जाने की बात किसी से कहना नहीं। यदि कह दोगे, तो हमारा दोष नहीं। हे प्रतापभानु, सुनो, इस बात के प्रकट करने से अथवा ब्राह्मणों के श्राप से तुम्हारा नाश होगा और किसी उपाय से, चाहे ब्रह्मा और शंकर भी मन में क्रोध करें, तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी।'

राजा ने मुनि के चरण पकड़कर कहा, 'हे स्वामी, सत्य ही है। ब्राह्मण और गुरु के क्रोध से कहिए कौन रक्षा कर सकता है? यदि ब्रह्मा भी क्रोध करें तो गुरु बचा लेते हैं। पर गुरु से विरोध करने पर जगत में कोई भी बचाने वाला नहीं है। यदि मैं आपके कथन के अनुसार नहीं चलूँगा, तो भले ही मेरा नाश हो जाए, मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। मेरा मन तो हे प्रभो, केवल एक ही डर से डर रहा है कि ब्राह्मणों का श्राप बड़ा भयानक होता है। ब्राह्मण किस प्रकार से वश में हो सकते हैं, कृपा करके वह भी बताइए। हे दीनदयालु, आपको छोड़कर और किसी को मैं अपना हितू नहीं देखता।'

तपस्वी ने कहा, 'हे राजन्, सुनो, संसार में उपाय तो बहुत हैं, पर वे कष्ट साध्य हैं, बड़ी कठिनता से बनने में आते हैं, और इस पर भी सिद्ध हों या न हों (उनकी सफलता निश्चित नहीं है)। हाँ, एक उपाय बहुत सहज है, परन्तु उसमें भी एक कठिनता है। हे राजन्, वह युक्ति तो मेरे हाथ है, पर मेरा जाना तुम्हारे नगर में हो नहीं सकता। जब से पैदा हुआ हूँ, तब से आज तक मैं किसी के घर अथवा गाँव नहीं गया। परन्तु यदि नहीं जाता हूँ, तो तुम्हारा काम बिगड़ता।'
राजा ने मुनि के चरण पकड़ लिए और कहा, 'ऐसी नीति कही है कि बड़े लोग छोटों पर स्नेह करते ही हैं। हे स्वामी, कृपा कीजिए। आप संत हैं। दीनदयालु हैं। हे प्रभो, मेरे लिए इतना कष्ट (अवश्य) सहिए।

राजा को अपने अधीन जानकर कपट में प्रवीण तपस्वी बोला, 'हे राजन्, सुनो, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, जगत में मुझे कुछ भी दुर्लभ नहीं है। तुम्हारा काम अवश्य करूँगा क्योंकि तुम, मन, वाणी और शरीर (तीनों) से मेरे भक्त हो। नरपति, मैं यदि रसोई बनाऊँ और तुम उसे परोसो और मुझे कोई जानने न पावे, तो उस अन्न को जो जो खाएगा, सो सो तुम्हारा आज्ञाकारी बन जाएगा। यही नहीं, उन

भोजन करने वालों के घर भी जो कोई भोजन करेगा, हे राजन्, सुनो, वह भी तुम्हारे अधीन हो जाएगा। हे राजन्, जाकर यही उपाय कर और वर्ष भर नित्य भोजन कराने का संकल्प कर लेना। नित्य नए एक लाख ब्राह्मणों को कुटुम्ब सहित निमंत्रित करना। मैं तुम्हारे सकंल्प के काल अर्थात एक वर्ष तक प्रतिदिन भोजन बना दिया करूँगा। हे राजन्, इस प्रकार बहुत ही थोड़े परिश्रम से सब ब्राह्मण तुम्हारे वश में हो जाएँगे। ब्राह्मण हवन, यज्ञ और सेवा-पूजा करेंगे, तो उस प्रसंग (संबंध) से देवता भी सहज ही वश में हो जाएँगे। मैं एक और पहचान तुमको बताए देता हूँ कि मैं इस रूप में कभी न आऊँगा। हे राजन्, मैं अपनी माया से तुम्हारे पुरोहित को हर लाऊँगा। तप के बल से उसे अपने समान बनाकर एक वर्ष यहाँ रखूँगा और हे राजन्, सुनो, मैं उसका रूप बनाकर सब प्रकार से तुम्हारा काम सिद्ध करूँगा। हे राजन्, रात बहुत बीत गई, अब सो जाओ। आज से तीसरे दिन मुझसे तुम्हारी भेंट होगी। तप के बल से मैं घोड़े सहित तुमको सोते ही में घर पहुँचा दूँगा। मैं वही पुरोहित का वेश धरकर आऊँगा। जब एकांत में तुमको बुलाकर सब कथा सुनाऊँगा तब तुम मुझे पहचान लेना।'

राजा ने आज्ञा मानकर शयन किया और वह कपट ज्ञानी आसन पर जा बैठा। राजा थका था, उसे खूब गहरी नींद आ गई। पर वह कपटी कैसे सोता? उसे तो बहुत चिन्ता हो रही थी। उसी समय वहाँ कालकेतु राक्षस आया जिसने सूअर बनकर राजा को भटकाया था। वह तपस्वी राजा का बड़ा मित्र था और खूब छल प्रपंच जानता था। उसके सौ पुत्र और दस भाई थे जो बड़े ही दुष्ट किसी से न जीते जाने वाले और देवताओं को दुःख देने वाले थे। ब्राह्मणों, संतों और देवताओं को दुःखी देखकर राजा ने उन सबको पहले ही युद्ध में मार डाला था। उस दुष्ट ने पिछला बैर याद करके तपस्वी राजा से मिलकर सलाह विचारी (षड्यंत्र किया) और जिस प्रकार शत्रु का नाश हो, वही उपाय रचा। भावीवश राजा प्रतापभानु कुछ भी न समझ सका। उसने प्रतापभानु राजा को घोड़े सहित क्षणभर में घर पहुँचा दिया। राजा को रानी के पास सुलाकर घोड़े को अच्छी तरह से घुड़साल में बाँध दिया। फिर वह राजा के पुरोहित को उठा ले गया और माया से उसकी बुद्धि को भ्रम में डालकर उसे उसने पहाड़ की खोह में ला रखा। वह आप पुरोहित का रूप बनाकर उसकी सुंदर सेज पर जा लेटा। राजा सबेरा होने से पहले ही जागा और अपना घर देखकर उसने बड़ा ही आश्चर्य माना। मन में मुनि की महिमा का

अनुमान करके वह धीरे से उठा, जिसमें रानी न जान पावे। फिर उसी घोड़े पर चढ़कर वन को चला गया। नगर के किसी भी स्त्री पुरुष ने नहीं जाना। दो पहर बीत जाने पर राजा आया। घर घर उत्सव होने लगे और बधावा बजने लगा। जब राजा ने पुरोहित को देखा, तब वह अपने उसी कार्य का स्मरणकर उसे आश्चर्य से देखने लगा। राजा को तीन दिन युग के समान बीते। उसकी बुद्धि कपटी मुनि के चरणों में लगी रही। निश्चित समय जानकर पुरोहित बना हुआ राक्षस आया और राजा के साथ की हुई गुप्त सलाह के अनुसार उसने अपने सब विचार उसे समझाकर कह दिए। संकेत के अनुसार गुरु को उस रूप में पहचानकर राजा प्रसन्न हुआ। उसने तुरंत एक लाख उत्तम ब्राह्मणों को कुटुम्ब सहित निमंत्रण दे दिया। पुरोहित ने छह रस और चार प्रकार के भोजन, जैसा कि वेदों में वर्णन है, बनाए। उसने मायामयी रसोई तैयार की और इतने व्यंजन बनाए जिन्हें कोई गिन नहीं सकता। अनेक प्रकार के पशुओं का मांस पकाया और उसमें उस दुष्ट ने ब्राह्मणों का मांस मिला दिया। सब ब्राह्मणों को भोजन के लिए बुलाया और चरण धोकर आदर सहित बैठाया।

ज्यों ही राजा परोसने लगा, उसी काल आकाशवाणी हुई, ' हे ब्राह्मणो, उठ उठ कर अपने घर जाओ, यह अन्न मत खाओ। इस के खाने में बड़ी हानि है। रसोई में ब्राह्मणों का मांस बना है।'

आकाशवाणी का विश्वास मानकर सब ब्राह्मण उठ खड़े हुए। राजा व्याकुल हो गया (परन्तु), उसकी बुद्धि मोह में भूली हुई थी। होनहारवश उसके मुँह से एक बात भी न निकली। तब ब्राह्मण क्रोध सहित बोल उठे उन्होंने कुछ भी विचार नहीं किया, 'अरे मूर्ख राजा, तू जाकर परिवार सहित राक्षस हो। रे नीच क्षत्रिय, तूने तो परिवार सहित ब्राह्मणों को बुलाकर उन्हें नष्ट करना चाहा था। ईश्वर ने हमारे धर्म की रक्षा की। अब तू परिवार सहित नष्ट होगा। एक वर्ष के भीतर तेरा नाश हो जाए। तेरे कुल में कोई पानी देने वाला तक न रहेगा।'

श्राप सुनकर राजा भय के मारे अत्यन्त व्याकुल हो गया।

फिर सुंदर आकाशवाणी हुई।

बिप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा। नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ।।
चकित बिप्र सब सुनि नभ बानी। भूप गयउ जहँ भोजन खानी ।।

हे ब्राह्मणों, 'तुमने विचार कर श्राप नहीं दिया। राजा ने कुछ भी अपराध नहीं किया।'

आकाशवाणी सुनकर सब ब्राह्मण चकित हो गए।

पुरोहित को उसके घर पहुँचाकर असुर कालकेतु ने कपटी तपस्वी को खबर दी। उस दुष्ट ने जहाँ-तहाँ पत्र भेजे जिससे सब बैरी राजा सेना सजा-सजाकर चढ़ दौड़े, और उन्होंने डंका बजाकर नगर को घेर लिया। नित्य प्रति अनेक प्रकार से लड़ाई होने लगी। प्रतापभानु के सब योद्धा शूरवीरों रण में जूझ मरे। राजा भी भाई सहित खेत रहा।

सत्यकेतु कुल कोउ नहिं बाँचा। बिप्रश्राप किमि होइ असाँचा ।।
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई, निज पुर गवने जय जसु पाई ।।

सत्यकेतु के कुल में कोई नहीं बचा। ब्राह्मणों का श्राप झूठा कैसे हो सकता था। शत्रु को जीतकर नगर को फिर से बसाकर सब राजा विजय और यश पाकर अपने अपने नगर को चले गए।

यह प्रतापी राजा अगले जन्म में राक्षस सम्राट बना और भगवान् ने इसके कल्याण हेतु नर रूप धारण किया।

Satyketu had two gallant sons who were repositories of all virtues and most staunch in battle. The elder of the two and the heir to the throne was Pratapabhanu, which was enthroned by the king Satyketu before retiring to the forest by accepting Vaanprasth Ashram. He looked after his subjects with utmost care according to the precepts of the Vedas and there was not a speck of sin anywhere in his kingdom. The king was a

man of great intelligence and wisdom. Whatever meritorious act he performed in thought, word or deed, the wise king dedicated it to Lord Vishnu.

One day the king went for hunting in a forest of his kingdom. He saw a wild huge boar. On seeing this huge boar, which resembled a purple mountain peak, the king whipped the horse and advanced rapidly towards the boar. When the boar saw that the horse was following him, he ran very fast like wind. The king tried to kill the boar by his arrows, but the boar saved itself by its wiliness. The beast rushed on, sometimes hiding and again emerging. The king continued to follow him in much excitement on the track of the boar. The boar went afar into a dense forest. Even though the king was all by himself and was faced with untold hardships in the forest, still he would not abandon the chase. Seeing the king so determined, the boar slunk away into a deep mountain cave. When the king perceived that there was no access to the cave, he returned very disappointed. However, he lost his way to his kingdom. Exhausted with much exertion and oppressed by hunger and thirst, the king and his horse kept searching for a stream or pond and almost fainted for want of water. While wandering in the forest, he saw a hermitage. In that hermitage, there lived an exiled king disguised as a hermit, who was defeated by the king Pratapbhanu. He was waiting for an opportune time to fight with the king Pratapbhanu to regain his kingdom. King Pratapabhanu went to him thinking him as a saint. This exiled king recognized king Pratapbhanu, but king Pratapbhanu could not recognise him. King Pratapbhanu made obeisance to him. The king Pratapbhanu was, however, too astute to disclose his name. Seeing king Pratapabhanu thirsty, he showed him a lake nearby. The king Pratpbhanu took bath in the lake, got refreshed and came back to the hermitage.

The hermit gave him a seat with great respect, and then spoke to him very politely, "Who are you, and why do you risk your life by roaming in the

forest all alone? You are so young and handsome. I can see that you may belong to a royalty.'

King Pratapbhanu, hiding his real identity, then spoke to the hermit, 'O great Sage, there is a king named Pratapabhanu. I am his minister. I came to the forest for hunting, but have lost my way. This is my great fortune that I saw your hermitage. It is my great pleasure to see you. It leads me to believe that something good is about to befall me.'

The hermit the said, "O son, it is now dusk and your city is far away from here. The forest is dense and trackless. It is not safe for you to travel back to your kingdom at this time. You take rest now and may depart next morning.'

"Very well, sir," the king replied.

He then spoke to him in soft and endearing terms, "O saint, you are like father to me. Looking upon me as your son, O great Sage, please tell me your name.'

The king did not recognize him, but the disguised hermit recognized king Pratapbhanu. Though the king had a pure heart, this disguised hermit was a fraudulent. Since he was an enemy of the king, he thought this an opportune moment to take revenge from the king. He uttered the following soft yet false and artful words, "O, minister, my name is now Bhikhari (a mendicant) as I am penniless and homeless person.'

The king was moved by his softness and replied, "O saint, I know that those who are repositories of wisdom and free from pride like yourself, always keep their reality concealed even though proficient in every way. They prefer to remain as mendicant in tattered clothes. O respected

hermit, the penniless and homeless persons like you fill the minds of even Vairagies. Whomsoever you may be, I bow at your feet. Please bless me."

Listening such kind words of the king Pratapbhanu and considering him in his spell, the hermit spoke with a still greater affection "Listen O king, I tell you sincerely that I have dwelt here for long. No one has come to me so far nor do I make myself known to anyone. The popularity and fame are like a wild fire which consumes the forest of penance, so, I keep away from this. I have nothing to do with anything other than Lord Vishnu. Now, my son, if I were to keep anything from you, I shall incur the most severe blame. My name is Ekatanu."

Hearing this, the king bowed his head and asked further, "kindly explain to me the meaning of this appellation recognizing me as your faithful son.'

The disguised hermit replied, 'my birth took place at the first dawn of creation. Since then, I have never taken another body, that is why I am called Ekatanu. Believe me my son, I have achieved this through penance. By dint of penance, Brahma creates the universe. By dint of penance, Lord Vishnu assumed the role of its protector. By dint of penance, again, Lord Sambhu destroys the world. There is nothing in this world which cannot be attained through penance."

Further said the hermit, "O king, I know you very well, even though you tried to hide your identity from me. However, I appreciate this move on your part. O king, this is a political requirement that the kings should not disclose their names to strangers in such situations. I know that your name is king Pratapbhanu. The king Satyaketu was your father. O king, by the grace of the Lord, I know everything, but foreseeing my own harm, I refuse to tell everything which I may know. When I saw your natural straightforwardness, affection, faith and political wisdom, I conceived a spontaneous affection for you, and that is why I told you my own story on

your request. I am now pleased with you and will provide you anything you may wish.'

Hearing these kind words, the king rejoiced and clasping the hermit's feet, he said "O gracious Sage, you are so kind. I would ask a boon which is though impossible to attain otherwise, but possible with your grace. Let my body be free from old age, death and suffering. Let no one vanquish me in battle and let me enjoy undisputed sovereignty over the globe for a hundred Kalpas (repetitions of creation) and let me have no enemies."

The hermit replied, "So be it, O king. But there is one difficulty. Listen it carefully. I promise you that the Death shall bow at your feet. The only exception shall be the Brahmins. The Brahmins are ever powerful by virtue of their penance. No one can deliver from their wrath. If you can reduce the Brahmins to your will, O king, even Brahma, Vishnu and the great Lord Shiva shall be at your command. Might is of no avail against the Brahmins. I tell you this truth. Listen, O king, if you may escape the Brahmin's curse, you shall never perish. I will help you to win the Brahmins. Please do not tell anyone about this meeting."

'For sure, I will not disclose this meeting to anyone, my Lord. Now tell me O great Sage, how can I be delivered from any wrath of the Brahmins?', asked king Pratapbhanu.

Knowing that the king was completely under his influence, the hermit, who was clever at deception said, "Listen O king. I tell you the truth. For me, there is nothing hard to obtain in this Universe. I will surely accomplish your object. The power of Yoga (contemplation), planning, penance and mystic formulas works only when secrecy is maintained about them. O king, if I cook food and you serve it, and if nobody comes to know my identity, then whomsoever will eat that food shall become amenable to your orders. O king, go and work on this scheme. For the following one

year, invite every day a new set of a hundred thousand Brahmins with their families for feast. In this way, O king, all the Brahmins shall be forced to accept your will. The Brahmins in their turn will offer oblations into the sacred fire, perform big sacrifices and practise adoration. Through that channel, the Gods shall be easily won over. I give you one more sign. I will never come in this hermit form. By my delusive power, O king, I will come to you as your family priest. By my Yogic powers, I will keep your priest here for a year, while O king, I will take his form and manage everything for you. The night is far gone, so you had better retire now. On the third day from now, we will meet again. By my divine Yogic powers, I will now send you to your home with your horse, even while you are asleep. I will come in the form as I have told you, and you will recognize me when I call you aside and remind you of all this."

The king then went to sleep in obedience to the hermit, while the counterfeit Sage returned to his seat and sat down there. Deep sleep came upon the weary monarch, but the false hermit was waiting for his friend, the demon Kalketu. This was his friend Kalketu, who took the form of a boar to bring king Pratapbhanu to the hermitage of this exiled king.

Kalketu, a great friend of this false hermit, was skilled in manifold ways of deceit. He had a hundred sons and ten brothers who were great villains, invincible and annoying to the Gods. Seeing that the Brahmins, saints and Gods were in distress due to these sons and brothers of Kalketu, the king had killed them in a battle. Recalling the old grudge, the wretch conspired with the hermit, and contrived a plot for the extermination of the enemy.

Kalketu arrived in the hermitage. The hermit was delighted to see his ally, and rose to meet him. In an instant he conveyed Pratapbhanu to his palace with horse. Putting the king to bed beside his queen, he tied up the horse in the stall in the proper way. He carried off the king's family priest and kept him in a mountain cave.

As planned, on the third day of this meeting between king Pratapbhanu and the hermit, assuming the form of the family priest, the hermit arrived at the palace of the king Pratapbhanu. When the king saw his family priest, he understood the plan of the hermit. The king was delighted to recognize his preceptor in the priest's form. His mind was too clouded to have any sense left. At once, he invited a hundred thousand chosen Brahmins with their families for feast.

The priest cooked four kinds of foods with six different tastes as mentioned in the Vedas. He prepared an illusory banquet and a variety of seasoned dishes more than one could count. Dressing the flesh of a variety of animals, the wretch mixed with it the cooked flesh of Brahmins. All the invited Brahmins were then called for the feast. Their feet were duly washed, and they were respectfully shown to their places. The moment the king began to serve the food, a voice from the sky (Akashvani) came, "Stand up Brahmins and return to your homes. Do not eat this food. It is most harmful. The dishes include the flesh of the Brahmins."

Hearing this voice from the sky (Akashvani), the Brahmins stood up immediately from their seats believing the voice from the sky. The king lost his nerve. His mind was bewildered with infatuation. As fate would have it, he could not utter a word.

Then the Brahmins in wrath cursed the king Pratapbhanu, "O foolish king, you have tried to pollute us. We curse you that you and your family take birth as demons. O king, thank God that He preserved our sanctity. In an year you will perish with your family. Not a soul shall be left in your family to offer water to gratify your spirit."

Hearing the curse, the king was sore stricken with fear.

Again, a voice was heard from heaven, "O holy Brahmins, you have uttered this curse without careful thought. The king has committed no sin."

The Brahmins were astounded when they heard the Akashvani. The king hastened to the kitchen. There was neither any food there nor the Brahmin cook. The king returned in deep thought. He related the whole story to the Brahmins and threw himself on the ground frantic with fear."

'Even though you are guiltless, O king, what is inevitable fails not. Brahmin's curse is very terrible. No amount of effort can counteract it," said the Brahmins. Saying so, all the Brahmanas dispersed.

Now, the disguised hermit made preparations for the battle with king Pratapbhanu. He invited all the kings on the earth which were defeated by the king Pratapbhanu. The battle was fought every day. However, as a result of the curse of Brahmins, the king with all his brothers and sons were killed. The ladies of the palace took their own lives in sacrificial fire. They became Sati. Having vanquished the foe, king Pratapbhanu, and re-inhabiting the city, all the kings returned to their own capitals enriched with victory and fame.

In due time, this king, with his family, was born as a demon. The king as demon was a formidable hero and a companion of the king of Lanka, Ravan. (Some scripture says that actually this king was reborn in the spirit of Ravan with the soul of Jay, the security chief of the Lord Vishnu who was cursed to take birth as demon by the sons of Lord Brahma). He, his brother and his sons were all wicked, monstrous and devoid of sense and were ruthless, bloody and sinful. They were a torment to all creation beyond what words can tell. These demons did penance to please Lord Brahma and asked boon not to be killed by anyone other than human and monkeys. They were very powerful and no one can dare to face them.

Lord Vishnu incarnated in the form of Lord Ram in human form to kill them with the help of monkeys.

हे भवानी एक और कारण सुनो जिस लिए विष्णु भगवान् ने नर का रूप धारण किया। ये हे प्रेम वश।

Lord Vishnu also incarnates on Earth to fulfil the desire of His devotees to see (to give Darshan) Him in person. When there is an intense love in the hearts of His devotees and they can no longer bear the separation from the Lord, then Lord appears before them to fulfil their desire. Goswami Tulasi Das Ji gave the narration of such an intense love to God by the great king Manu and his queen Satrupa in Shri Ram Charit Manas.

स्वायंभू मनु और सतरूपा । जिन्ह तें भई नरसृष्टि अनूपा ।।
दंपति धर्म आचरण नीका । अजहुँ गाव श्रुति जिन्ह कै लीका ।।

मनु और उनकी पत्नी शतरूपा से ही मनुष्य जाति की उत्पत्ति हुई। इन दोनों पति-पत्नी के धर्म और आचरण बहुत ही पवित्र थे। वृद्ध होने पर मनु अपने पुत्र को राज-पाठ देकर वन में चले गए। वहां जाकर मनु और शतरूपा ने कई हजार साल तक भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की। प्रसन्न होकर भगवान विष्णु प्रकट हुए।

Svāyaṃbhū manu aru satarūpā । jinha tēṃ bhai narasṛṣṭi anūpā ।।
Daṃpati dharama ācarana nīkā । ajahu gāva śruti jinha kai līkā ।।

The king Swayambhuva Manu and his queen Satarupa were the great personalities of Satyug era. When they became old, they enthroned their son as the king of their kingdom and left to the forests to meditate on the God. They prayed and mediate to attain the Darshan (to see the God in person) of the Lord for several thousand years. Lord Vishnu was pleased

with their penance. He spoke through sky (Akasvani). 'O Manu and Satrupa, I am very pleased with your love to me. Please ask for a boon.'

जो भुसुंडि मन मानस हंसा । सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ।।
देखहिं हम सो रूप भरी लोचन । कृपा करहु प्रनतारति मोचन ।।

आकाशवाणी सुन मनु एवं सतरूपा जी बोले, 'हे प्रभु, जो काकभुशुंडि के मनरूपी मान सरोवर में विहार करने वाले हंस है, सगुण और निर्गुण कहकर वेद जिनकी प्रशंसा करते हैं, हे शरणागत के दुःख मिटाने वाले प्रभो, ऐसी कृपा कीजिए कि हम उसी रूप को नेत्र भरकर देखें।'

मनु और सतरूपा के प्रेम एवं भक्तिमय वचन सुन तब प्रभु उनके समक्ष प्रगट हुए और वर मांगने के लिए कहा।

Jō bhusuṃḍi mana mānasa haṃsā ।
saguna aguna jēhi nigama prasaṃsā ।।
Dēkhahiṃ hama sō rūpa bhari lōcana ।
kṛpā karahu pranatārati mōchan ।।

Then Manu and Satrupa with folded hands spoke thus, 'O friend of the forlorn, if You have any affection for us, be pleased to grant this boon to us. The form which dwells in the heart of Lord Shiva and is sought by the Sages, which sports like a swan in the lake of Bhusundi's mind and is glorified by the Vedas as both with and without attributes, please be gracious to us and let us feast our eyes on Your form."
Listening such kind words with full of devotion, Lord Vishnu appeared in person before both of them, and asked for a boon.

दानी सिरोमनि कृपानिधि । नाथ कहूँ सतिभाउ ।।
चाहूं तुमहिं समान सुत । प्रभु सो कवन दुराऊ ।।

तब मनु जी बोले, 'हे दानियों के शिरोमणि, हे कृपानिधान, हे नाथ!,मैं अपने मन का सच्चा भाव कहता हूँ कि मैं आपके समान पुत्र चाहता हूँ। प्रभु से भला क्या छिपाना।'

Dāni sirōmani kṛpānidhi nātha kahau satibhāu I
Cāhau tumhahi samāna suta prabhu sana kavana durāu II

Then Manu Ji spoke to the Lord, 'O crest jewel of donors, O gracious Lord, I tell You my sincere wish. I would like to have a son like You. There is nothing which is not known to You.'

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । एवमस्तु करूणानिधि बोले ।।
आपु सरिस खोजों कहँ जाई । नृप तव तनय होब मैं आयी ।।

उनकी इच्छा सुनकर श्री हरि ने कहा, 'संसार में मेरे समान कोई और नहीं है। इसलिए तुम्हारी अभिलाषा पूरी करने के लिए मैं स्वयं तुम्हारे पुत्र के रूप में जन्म लूंगा। कुछ समय बाद आप अयोध्या के राजा दशरथ के रूप में जन्म लेंगे। उसी समय मैं आपका पुत्र बनकर आपकी इच्छा पूरी करूंगा।'

इस प्रकार मनु और शतरूपा को दिए वरदान के कारण भगवान विष्णु को राम अवतार लेना पड़ा।

Dēkhi prīti suni bacana amōlē I ēvamastu karunānidhi bōlē II
Aap sarisa khōjauṃ kahaom jāī I nṛpa tava tanaya hōba maiṃ āī II

Listening the desire of Manu Ji, the Lord spoke thus, '"Tasthastu (So it be). Where shall I go to find My equal? O king, I Myself shall be born as a son to you. O king Manu and queen Satrupa, after sometime you will be born in Ayodhya and will be the king and queen of this great kingdom. Then, I shall take reincarnation as your son and fulfil your desire."

Thus, Lord Vishnu incarnated due to the boon granted to Manu and Satrupa Ji.

शिव शंकर भगवान् माँ भवानी से श्री राम कथा को आगे बढ़ाते हुए बोले, 'हे भवानी, त्रेता युग में जब पराये धन और परायी स्त्री पर मन चलाने वाले, दुष्ट, चोर और जुआरी बहुत बढ़ गए। लोग माता पिता और गुरुओं की अवहेलना करने लगे, तब पृथ्वी माँ विचलित होकर गौ माता का रूप धारण कर सभी देवी एवं देवताओं एवं ब्रह्मा जी के साथ भगवान् विष्णु की शरण में गईं।सभी भगवान् विष्णु की स्तुति करने लगे।

Lord Shiva, continuing the story of Lord Shri Ram, spoke to Mother Bhavani, 'O Bhavani, in Treta Yug, lots of demons took birth, who under the leadership of Ravan, his brother Kumbhakaran and son Meghnad were making havoc on the earth. There was great disrespect for religion. Mother Earth was extremely alarmed and perturbed. She said to Herself, "The weight of mountains, rivers and oceans is not so oppressive to me as of him who is malevolent to others." She saw all goodness perverted, yet for fear of Ravana and his accomplished, She could not utter a word. After great deliberation, She took the form of a cow and went to the spot where all the Demi-Gods and Sages were in hiding. With tears in her eyes, She told them Her sufferings, but none of them could be of any help to Her. Then, on the advice of Lord Shiva, all of them started praying Almighty Lord Vishnu.

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिधुंसुता प्रिय कंता ।।
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ।।
जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा ।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ।।
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृंदा ।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ।।

जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ।।
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा ।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा ।।
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहि जाना ।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना ।।
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ।।

हे प्रभु, आपकी जय हो, जय हो। हे देवताओंके स्वामी, सेवकोंको सुख देनेवाले, शरणागतकी रक्षा करनेवाले भगवान्, हे गौ और ब्राह्मणों का हित करनेवाले, असुरों का विनाश करने वाले, समुद्र की कन्या (श्रीलक्ष्मीजी) के प्रिय स्वामी, आपकी जय हो।

हे देवता और पृथ्वी का पालन करने वाले, आपकी लीला अद्भुत है। आपकी लीला का भेद कोई नहीं जानता। ऐसे जो स्वभाव से ही कृपालु और दीनदयालु हैं, वे ही हमपर कृपा करें। हे अविनाशी, सबके हृदय में निवास करनेवाले (अन्तर्यामी), सर्वव्यापक, परम आनन्दस्वरूप, अज्ञेय, इन्द्रियों से परे, पवित्र चरित्र, माया से रहित मुकुन्द (मोक्षदाता), आपकी जय, जय हो।

इस लोक और परलोक के सब भोगों से विरक्त तथा मोह से सर्वथा छूटे हुए (ज्ञानी) मुनिवृन्द भी अत्यन्त अनुरागी (प्रेमी) बनकर जिनका रात दिन ध्यान करते हैं, और जिनके गुणों के समूह का गान करते हैं, उन सच्चिदानन्द की जय हो। जिन्होंने बिना किसी दूसरे संगी अथवा सहायक के अकेले ही (या स्वयं अपनेको त्रिगुणरूप, ब्रह्मा, विष्णु शिवरूप में प्रगट कर), अथवा बिना किसी उपादान कारण के अर्थात् स्वयं ही सृष्टि का कारण बनकर तीन प्रकार की सृष्टि उत्पत्र की, वे पापों का नाश करने वाले भगवान् हमारी सुधि लें।

हे प्रभु हम न भक्ति जानते हैं, न पूजा। संसार के (जन्म मृत्यु के) भय का नाश करने वाले, मुनियों के मन को आनन्द देने वाले और विपत्तियों के समूह को नष्ट

करने वाले हे प्रभु, हम सब देवताओं के समूह मन, वचन और कर्म से चतुराई करने की बान छोड्कर आपकी की शरण आये हैं।

सरस्वती, वेद, शेषजी और सम्पूर्ण ऋषि कोई भी जिनको नहीं जानते, जिन्हें दीन प्रिय हैं, ऐसा वेद पुकार कर कहते हैं, वे ही श्री भगवान् हम पर दया करें। हे संसार रूपी समुद्र के (मथने के) लिये मन्दराचल रूप, सब प्रकार से सुन्दर, गुणों के धाम और सुखों की राशि नाथ, आपके चरण कमलों में मुनि, सिद्ध और सारे देवता भय से अत्यन्त व्याकुल होकर नमस्कार करते हैं।

देवता और पृथ्वी को भयभीत जानकर और उनके स्नेहयुक्त वचन सुनकर शोक और सन्देह को हरने वाली गम्भीर आकाशवाणी हुई।

जानि सभय सुरभूमि सुनि बचन समेत सनेह ।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ।।

Jaya jaya suranāyaka jana sukhadāyaka pranatapāla bhagavaṃtā l
Gō dvija hitakārī jaya asurārī sidhuṃ sutā priya kaṃtā ll
Pālana sura dharanī adbhuta karanī marama na jānai kōī l
Jō sahaja kṛpālā dīnadayālā karau anugraha sōī ll
Jaya jaya abināsī saba ghaṭa bāsī byāpaka paramānaṃdā l
Abigata gōtītaṃ carita punītaṃ māyārahita mukuṃdā ll
Jēhi lāgi birāgī ati anurāgī bigatamōha munibṛṃdā l
Nisi bāsara dhyāvahiṃ guna gana gāvahiṃ jayati saccidānaṃdā ll
Jēhiṃ sṛṣṭi upāī tribidha banāī saṃga sahāya na dūjā l
Sō karau aghārī ciṃta hamārī jānia bhagati na pūjā ll
Jō bhav bhaya bhaṃjana muni mana raṃjana gaṃjana bipati barūthā l
Mana bacakrama bānī chāḍai sayānī sarana sakala sura jūthā ll
Srada śruti sēṣā riṣaya asēṣā jā kahu kōu nahi jānā l
Jēhi dīna piārē bēda pukārē dravau sō śrībhagavānā ll

Bhav bāridhi maṃdara sab bidhi suṃdar gunamaṃdira sukhapuṃjā ।
Muni siddh sakala sura parama bhayātura namata nātha pada kaṃjā ।।

Glory, all glory to You, O Lord of immortals. O delight of the devotees, O protector of the suppliant, O benefactor of cows and the Brahmanas, O slayer of demons, O beloved consort of Laksmi (daughter of the ocean), glory to You.

O guardian of Gods and the Earth, mysterious are Thy ways. Their secret is known to none. Let Him who is benevolent by nature and compassionate to the humble, show His grace.

Glory, all glory to the immortal Lord Mukunda (the bestower of salvation and love), who resides in all hearts, and is supreme bliss personified, omnipresent, unknowable, and super-sensuous, whose acts are holy and who is beyond the veil of Maya (illusion).

Glory to Him who is truth, consciousness and bliss combined. Glory to the God who is most lovingly meditated upon day and night, and whose praises are sung by multitudes of Sages who are full of dispassion and entirely free from infatuation.

Let the slayer of the sinful Agha bestow His care on us who brought forth the threefold creation (dominated by sattva, rajas and tamas) without anyone else to assist Him.

We know neither devotion nor worship, my Lord. You disperse the fear of transmigration. You are the delights of the mind of Sages and puts an end to hosts of calamities. We, the demigods betake ourselves to Him in thought, word and deed, giving up our wonted cleverness.

The Lord, who is known neither to Sharada (the Goddess of learning), nor to the Vedas, nor again to the Shesa (the serpent God), nor to any of the Sages, who as the Vedas proclaim loves the lowly, let Him moved to pity.

The Sages, Siddhas (a class of celestials naturally endowed with supernatural powers) and all Demigods, grievously stricken with fear, bow at the lotus feet of the Lord who serves as Mount Mandara for churning the ocean of worldly existence, and who is an abode of virtues and an embodiment of bliss.

Jāni sabhaya surabhūmi suni bacana samēta sanēha ।
Gaganagirā gaṃbhīra bhai harani sōka saṃdēha ।।

Knowing that the Demigods and the Earth were terror stricken and hearing their loving entreaties, a deep voice came from heaven (Akashvani), which removed all their doubt and anxiety.

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा ।।
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । लेहउँ दिनकर बंस उदारा ।।
कस्यप अदिति महातप कीन्हा । तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा ।।
ते दसरथ कौसल्या रूपा । कोसलपुरीं प्रगट नरभूपा ।।
तिन्ह के गृह अवतरिहउँ जाई । रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई ।।
नारद बचन सत्य सब करिहउँ । परम सक्ति समेत अवतरिहउँ ।।
हरिहउँ सकल भूमि गरुआई । निर्भय होहु देव समुदाई ।।

देवताओं और पृथ्वी को भयभीत जानकर और उनके स्नेहयुक्त वचन सुनकर शोक और संदेह को हरने वाली गंभीर आकाशवाणी हुई, 'हे मुनि, सिद्ध और देवताओं के स्वामियों, डरो मत। तुम्हारे लिए मैं मनुष्य का रूप धारण करूँगा, और उदार (पवित्र) सूर्यवंश में अंशों सहित मनुष्य का अवतार लूँगा। कश्यप और अदिति ने बड़ा भारी तप किया था। मैं पहले ही उनको वर दे चुका हूँ। वे ही

दशरथ और कौसल्या के रूप में मनुष्यों के राजा होकर श्री अयोध्यापुरी में प्रकट हुए हैं। उन्हीं के घर जाकर मैं रघुकुल में श्रेष्ठ चार भाइयों के रूप में अवतार लूँगा। नारद के सब वचन मैं सत्य करूँगा और अपनी पराशक्ति के सहित अवतार लूँगा। मैं पृथ्वी का सब भार हर लूँगा। हे देववृंद, तुम निर्भय हो जाओ।'

आकाश में ब्रह्म (भगवान) की वाणी को कान से सुनकर देवता तुरंत लौट गए। उनका हृदय शीतल हो गया।

Jani ḍarapahu muni siddha surēsā ।
Tumhahi lāgi dharihau nara bēsā ।।
Ansanha sahita manuja avatārā ।
Lēhau dinakara baṃsa udārā ।।
Kasyapa Aditi mahātapa kīnhā ।
Tinha kahu maiṃ pūraba bara dīnhā ।।
Tē Dasaratha Kausalyā rūpā ।
Kōsalapurīṃ pragaṭa narabhūpā ।।
Tinha kē gṛha avatarihau jāī ।
Raghukula tilaka sō cāriu bhāī ।।
Nārada bacana satya saba kariho ।
Parama sakti samēta avatarihun ।।
Harihau sakala bhūmi garuāī ।
Nirbhaya hōhu dēva samudāī ।।

'O Sages, Siddhas and Indra (the chief of Demigods), do not fear. I will assume the form of a human being for your sake. I shall be born as a human being along with My part manifestations in the glorious Surya Vansha (Solar clan). The Sage Kashyapa and his wife Aditi (in their incarnations as Manu and Satrupa) did severe penance. I have already given them a boon. They have appeared in the city of Ayodhya as king

and queen, Dasaratha and Kausalya. In their house, I shall take birth with other three brothers. I shall fulfil the words of Narada and shall descend to Earth with My supreme energy. Thus, I shall relieve the Earth of all its burden. Be fearless now, O Demigods.'

As the divine voice from heaven reached their ears, they returned to their homes with their heart soothed.

अब आगे की कथा सुनिये।

अवधपुरी में रघुकुल शिरोमणी दशरथ नाम के राजा हुए। उनके कौशल्या आदि चार रानियां थीं। प्रौढ़ अवस्था तक उनके कोई पुत्र नहीं हुए, इससे उन्हें अत्यंत चिंता हुई। वह अपने गुरु महर्षि वशिष्ठ जी के पास गए और अपनी व्यथा सुनायी। गुरु जी बोले, 'राजन थोड़ा सा धैर्य रखो, तुम्हारे चार पुत्र होंगे। महर्षि वशिष्ठ गुरु जी ने पुत्र कामेष्टी यज्ञ कराने हेतु महर्षि श्रृंगी जी को आमंत्रित किया।

सृंगी रिषहि बसिष्ठ बोलावा । पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ।।
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें । प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें ।।
जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा । सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ।।
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई । जथा जोग जेहि भाग बनाई ।।

महर्षि वशिष्ठ ने महर्षि श्रृंगी को बुलवाया और उनसे शुभ पुत्रकामेष्टि यज्ञ कराया। मुनि के भक्ति सहित आहुतियाँ देने पर अग्निदेव हाथ में चरु (हविष्यान्न खीर) लिए प्रकट हुए। अग्निदेव महर्षि श्रृंगी से बोले, 'महर्षि वशिष्ठ ने हृदय में जो कुछ विचारा था, तुम्हारा वह सब काम सिद्ध हो गया। हे ऋषिवर, तुम इस प्रसाद को सम्राट दशरथ को दे दो। वह जैसा उचित समझें, अपनी रानियों में विभाजित कर उन्हें दे दें।'

Now listen the story further.

श्री राम जन्म कथा STORY OF BIRTH OF LORD RAM

In the city of Ayodhya, there ruled a king who was a jewel of Raghu's race. His name was Dasaratha. He was a champion of virtue, a repository of good qualities and a man of wisdom. He was a sincere devotee of God Vishnu. He had three wives, Kaushalya, Kaikai and Sumitra. They all were leading holy life devoted to the Lord.

One day the king was sad at his heart that he had no children. He went to his Guru, Maharishi Vasishta and fell at his feet. He told the Guru his sorrow of not having any children. Maharishi Vasishta comforted him in many ways and said, "O king, have patience. You will have four sons, who will be known throughout the Universe. I will organise Putra Kameshti Yagn for you."

Then, Maharishi Vasishta then sent a messenger to Maharishi Shrangi to conduct this Putra-Kameshti Yagn.

Sṛṃgī riṣhi Basiṣṭha bōlāvā I Putrakāma subha jagya karāvā I I
Bhagati sahita muni āhuti dīnhē I Pragaṭē Agini carū kara līnhēṃ I I
Jō Basiṣṭh kachu hṛdaya bicārā I Sakal kāju bhā siddha tumhārā I I
Yaha habi bāomṭi dēhu nṛpa jāī I Jathā jōga jēhi bhāga banāī I I

Maharishi Shrangi came with his wife Shanta and performed the Yagn. When the Sage devoutly offered oblations into the sacred fire, the Lord of Fire appeared with an offering of rice boiled with milk (Kheer) in his hand. The Lord of the Fire said, "O Maharishi Shrangi, whatever Maharishi Vasishta has contemplated for you to perform this Yagn, that object is fully accomplished. Take this oblation and give it to the king Dashrath. He should divide it in appropriate proportions as he thinks fit, and give each portion to his wives."

अक्सर लोग यह प्रश्न पूछते हैं कि महर्षि वशिष्ठ तो परमतत्व ज्ञाता, भगवान् ब्रह्मा के मानस पुत्र, वेदों के अनगिनत श्लोकों के रचयिता एवं महान विद्वान् थे। उनसे अधिक समर्थ इस 'पुत्र कामेष्ठी यज्ञ' को संचालित करने में और कौन हो सकता था? उन्होंने इस यज्ञ को स्वयं न संचालित कर, महर्षि श्रृंगी को इस यज्ञ की आचार्यता के लिए आमंत्रित किया, और उन्हीं के कर कमलों से इस यज्ञ को फलीभूत कराया। ऐसा क्यों?

Often, people ask. Maharishi Vasishta himself was a great pundit of 'Reality/ Truth' (Tattva Gyaataa) and Maanas Putra of Lord Brahma who composed several verses of Vedas. Who could be more able Sage to perform this 'Putra Kaameshtri Yagn' than himself? Why did he not perform this Yagna for king Dasharath himself and rather invited Maharishi Shrangi to be the head priest of this Yagna?

यह समझना आवश्यक है कि इस प्रकार के यज्ञ तभी फलीभूत होतें हैं जब समस्त परिवार का आशीर्वाद प्राप्त हो। इसी कारण सनातन धर्म में धर्म कार्य के लिए सभी परिवार के सदस्यों का उपस्थित होना अनिवार्य बताया है। सम्राट दशरथ के सबसे बड़ी एक पुत्री थीं, शांता, जिनका विवाह महर्षि श्रंगी के साथ हुआ था। इस यज्ञ की पूर्ण सफलता के लिए शांता और महर्षि श्रंगी का इस यज्ञ में उपस्थित होना अत्यंत अनिवार्य था। महर्षि वशिष्ठ जानते थे कि साधारण निमंत्रण देने पर संभवतः महर्षि श्रंगी का आना संभव न हो सके, लेकिन वेद प्रणाली के अनुसार अगर किसी को आचार्य बना कर आमंत्रित किया जाए, तो धर्म कार्य को संचालन करने के लिए मना करना धर्म विरुद्ध है। अतः, उनको अगर यज्ञ आचार्य बनाकर आमंत्रित किया जाएगा, तो वह अवश्य ही मना नहीं कर सकेंगे, और यज्ञ संचालन करेंगे। और हुआ भी ऐसा ही।

It is important to understand here that success of such Yagn depends upon getting blessings of all the closed family members. For this reason, Sanatan Dharma preaches the presence of all family members during performing any religious activities.

The king Dasharatha had an older daughter by the name of Shanta who was married to Maharishi Shrangi. The presence of Shanta and Maharishi Shrangi was necessary for the success of this Yagn. Maharshi Vasishta knew that if an ordinary invitation was to be sent to Maharishi Shrangi to participate in the Yagn ceremony with his wife Shanta, and bless King Dashrath, it might be a possibility that he might not be able to come because of his social, religious and teaching responsibilities. Maharishi Shrangi was the head of his own Gurukul with hundreds of disciples. However, if he was to be invited as the Chief Priest of the Yagn ceremony, then, keeping the tradition of the Sanatan Vedic Dharma, it would be impossible for him to decline the invitation. It was considered against the Vedic Dharma tradition for a Rishi to decline an offer of invitation, if he is requested to be the chief (Acharya) of the ceremony. Hence, Maharishi Vasishta extended an invitation to Maharishi Shrangi to come with his wife Shanta to lead the Yagn and bless the king Dashrath.

माता शांता और महर्षि श्रंगी की कथा कुछ इस प्रकार है।

According to the Sanatan Scripture, the story of Maharishi Shrangi and Mother Shanta is as following.

श्री राम के माता पिता, भाइयों के बारे में तो प्रायः सभी जानते हैं लेकिन बहुत कम लोगों को यह मालूम है कि श्री राम की एक बहन भी थीं, जिनका नाम शांता था। वे आयु में चारों भाइयों से काफी बड़ी थीं। उनकी माता कौशल्या थीं। उनका विवाह कालांतर में महर्षि श्रंगी से हुआ था।

Everyone knows about the parents and brothers of Lord Ram, but very few people know that Lord Ram had a sister too, by the name of Shanta. She was much older than Lord Ram in age. She was the daughter of the king Dashrath and his queen Kaushalya. She was married to Maharishi Shrangi.

रानी वर्षिणी रानी कौशल्या की बहन थीं। उनका विवाह अंगदेश के राजा रोमपद से हुआ था। एक बार अंगदेश के राजा रोमपद और उनकी रानी वर्षिणी अयोध्या आए। उनके कोई संतान नहीं थी। बातचीत के दौरान राजा दशरथ ने कहा, 'मैं मेरी बेटी शांता आपको संतान के रूप में देता हूँ।'

The queen Kaushalya of Ayodhya, wife of the king Dashrath, had a younger sister by the name of queen Varshini. She was married to king Rompad, the ruler of Angdesh. Once king Rompad did visit Ayodhya with his wife queen Varshini. King Dashrath noticed that the couple did not seem to be happy for some reasons. He asked king Rompad for his unhappiness. King Rompad opened his heart to king Dashrath, and told him that though he is married to queen Varshini for several years now, they are not yet blessed with any children. King Dashrath did consult with his wife queen Kaushalya, and gave their daughter Shanta for adoption to king Rompad and queen Varshini.

रोमपद और वर्षिणी बहुत खुश हुए। उन्हें शांता के रूप में संतान मिल गई। उन्होंने बहुत स्नेह से उसका पालन पोषण किया, और माता-पिता के सभी कर्तव्य निभाए।

King Rompad and queen Varshini were thrilled to adopt Shanta as their daughter. They nurtured her with great love and affection as parents of princess Shanta.

एक दिन राजा रोमपद अपनी पुत्री से बातें कर रहे थे, तब द्वार पर एक ब्राह्मण आया और उसने राजा से प्रार्थना की कि वर्षा के दिनों में वे खेतों की जुताई में शासन की ओर से मदद प्रदान करें। राजा को यह सुनाई नहीं दिया और वे पुत्री के साथ बातचीत करते रहे।

Once when King Rompad was engaged in playing with his adopted daughter princess Shanta, a Brahmin came to his palace and requested him to grant State subsidies to help the farmers in ploughing and sowing the crop. The king did not properly listen his request and continued to play with his adopted daughter Shanta.

द्वार पर आए नागरिक की याचना न सुनने से ब्राह्मण को दुःख हुआ और वे राजा रोमपद का राज्य छोड़कर चले गए। वे इंद्र के भक्त थे। अपने भक्त की ऐसी अनदेखी पर इंद्रदेव राजा रोमपद पर क्रुद्ध हुए, और उन्होंने पर्याप्त वर्षा नहीं की। इससे खेतों में खड़ी फसल मुर्झाने लगी।

The Brahmin was saddened with this attitude of the king, and decided to leave the kingdom of Angdesh with his family and followers. The Brahmin and his followers were the great devotees of Lord Indra (the Lord of Rain). When Lord Indra saw such pity condition of his followers, he got angry with the king Rompad. Lord Indra, then, did not provide enough rains to the kingdom of Angdesh, and as such the kingdom was in the grip of drought.

इस संकट की घड़ी में राजा रोमपद महर्षि श्रंगी के पास गए और उनसे उपाय पूछा। महर्षि श्रंगी ने बताया कि वे इंद्रदेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करें। महर्षि श्रंगी ने यज्ञ किया। पर्याप्त बारिश हुई और और खेत खलिहान पानी से भर गए। इसके बाद राजा रोमपद ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री शांता का विवाह महर्षि श्रंगी से कर दिया, और वे सुखपूर्वक रहने लगे।

King Rompad approached Maharishi Shrangi and requested him to help him to please Lord Indra. Maharishi Shrangi then performed a Yagn which pleased Lord Indra. As a result of this Yagn, there was plenty of rain in the kingdom of Angdesh, and the farmers were happy. The pleased king Rompad then married his daughter Shanta to Maharishi Shrangi.

पौराणिक कथाओं के अनुसार महर्षि श्रंगी, महर्षि विभण्डक तथा अप्सरा उर्वशी के पुत्र थे। महर्षि विभण्डक ने इतना कठोर तप किया कि देवतागण भयभीत हो गये, और उनके तप को भंग करने के लिए अप्सरा उर्वशी को भेजा। अप्सरा उर्वशी ने उन्हें मोहित कर उनके साथ संसर्ग किया, जिसके फलस्वरूप महर्षि श्रंगी की उत्पत्ति हुयी। महर्षि श्रंगी के माथे पर एक सींग (शृंग) था, अतः उनका यह नाम पड़ा।

According to legends, Maharishi Shrangi was the son of Maharishi Vibhandak and Urvashi (a celestial nymph). Once Maharishi Vibhandak did great penance which frightened Lord Indra. He sent Urvashi to seduce Maharishi so his penance may be discontinued. Urvashi was successful in seducing the Maharshi, and with their union, a son was born which was named Shrangi. The child was born with a small horn on his head, hence named Shrangi by the couple.

महर्षि वसिष्ठ के निमंत्रण पर तब महर्षि श्रृंगी अपनी पत्नी शांता के साथ अयोध्या पहुंचे और उन्होंने पुत्र कामेष्ठि यज्ञ का सफलता पूर्वक संचालन किया। यज्ञ समापन पर अग्निदेव खीर का प्रसाद लेकर उपस्थित हुए, और उन्होंने महर्षि श्रंगी से कहा, 'हे ऋषि शिरोमणि, जैसा महर्षि वशिष्ठ ने विचार किया था, वह पूर्ण हो गया। इस प्रसाद को आप महाराज दशरथ को दे दें, और उनसे उनकी इक्षानुसार इसे चार भागों में विभाजित कर अपनी तीनों पत्नियों, कौशल्या, कैकई और सुमित्रा को देने को कहें। वह शीघ्र ही चार पुत्रो के पिता बनेंगे।'

यह कहकर अग्नि देव अंतर्ध्यान हो गए। तब महर्षि श्रंगी ने वह खीर महाराज दशरथ को सौंपी।

महाराज दशरथ ने तब उस खीर के अपनी इच्छानुसार चार भाग किये एवं अपनी पत्नियों को दिए। इस प्रकार सब रानियां गर्भवती हुईं।

गुरुदेव कहते हैं कि यहाँ प्रभु को पाने के लिए खीर के प्रसाद की अत्यंत महत्वा है। खीर मुख्यतः तीन पदार्थों से बनती है। दुग्ध, चावल एवं मीठा। दुग्ध, गौ माँ द्वारा दिया हुआ प्रेम और श्रद्धा का प्रतीक है। चावल माँ भूमि में कड़ी मेहनत और धैर्य के बाद प्राप्त होता है, अतः सुकर्म एवं धैर्य का प्रतीक है। मीठा भक्ति का प्रतीक है। जब प्रेम, श्रद्धा, सुकर्म, धैर्य एवं भक्ति का मिलन होता है, तब भगवान् प्रगट हो जाते हैं।

On an invitation of Maharishi Vashishtha, Maharishi Shrangi then came to Ayodhya and successfully performed the 'Putra Kamesthi Yagn' to please the Lord of Fire to grant king Dashrath a boon for the birth of son/sons. When Maharishi Shrangi devoutly offered oblations into the sacred fire, the Lord of Fire appeared with an offering of rice boiled with milk (Kheer) in his hand. Lord of the Fire then said to Maharishi Shrangi, "O great Sage, whatever Maharishi Vashishta contemplated, that object is fully accomplished. Take this oblation (Kheer), and give it to the king Dashrath. He should divide it in appropriate proportions as he thinks fit, and give to his all the three queens, Kaushalya, Kaikai and Sumitra. He will be blessed with four sons".

King Dashrath then took this Prasad of Kheer and divided appropriately into four portions and gave to his wives. Thus, all his wives, Kaushalya, Kaikai and Sumitra became pregnant.

Gurudev says that it is very important to note here why the Lord of Fire (Agnidev) presented Kheer (Rice Pudding) as Prasadam to be given to the queens of the king Dashrath to give birth of the four sons? Kheer, principally, is made out of three ingredients, milk, rice and sweet. Milk is given to us by Mother Cow (Gau Maata), and is the symbol of love and reverence. Rice is obtained by us from the Mother Earth (Bhoomi Maa) after hard labour and patience, hence is the symbol of good deeds and patience. Sweetness is the symbol of devotion. So, when these elements,

love, reverence, good deeds, patience and devotion are combined, then Lord manifests to us.

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि समय आने पर महाराज दशरथ चार पुत्रों के पिता बने।

नौमी तिथि मधु मास पुनीता । सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ।।
मध्यदिवस अति सीत न घामा । पावन काल लोक बिश्रामा ।।

पवित्र चैत्र का महीना था, नवमी तिथि थी। शुक्ल पक्ष और भगवान का प्रिय अभिजित् मुहूर्त था। दोपहर का समय था। न बहुत सर्दी थी, न धूप (गरमी) थी। वह पवित्र समय सब लोकों को शांति देने वाला था।

Goswami Tulasi Das Ji says that in due course of time, king Dashrath became father of four sons.

Naumī tithi madhu māsa punītā । Sukala paccha abhijita hariprītā ।।
Madhyadivasa ati sīta na ghāmā । Pāvana kāla lōka biśrāmā ।।

It was the ninth day of the bright half of the sacred month of Chaitra. The moon had entered the auspicious asterism named Abhijit. The sun was at its meridian. The day was neither cold nor hot. It was a holy time which gave peace to the whole world.

सीतल मंद सुरभि बह बाऊ । हरषित सुर संतन मन चाऊ ।।
बन कुसुम गिरिगन मनिआरा । स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ।।

शीतल, मंद और सुगंधित पवन बह रही था। देवता हर्षित थे और संतों के मन में (बड़ा) चाव था। वन फूले हुए थे, पर्वतों के समूह मणियों से जगमगा रहे थे और सारी नदियाँ अमृत की धारा बहा रही थी।

Sītala manda surabhi baha bāū l
Haraṣita sura saṃtana mana cāu l l
Bana kusumita girigana maniārā l
Stravahiṃ sakala saritā.mṛtadhārā l l

A cool, soft and fragrant breeze was blowing. The Demigods were feeling exhilarated and the Saints were bubbling with enthusiasm. The woods were full of blossoms. The mountains were resplendent with gems and every river flowed a stream of nectar.

सो अवसर बिरंचि जब जाना । चले सकल सुर साजि बिमाना ।।
गगन बिमल संकुल सुर जूथा । गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा ।।

जब ब्रह्माजी ने वह (भगवान के प्रकट होने का) अवसर जाना तब (उनके समेत) सारे देवता विमान सजा सजाकर चले। निर्मल आकाश देवताओं के समूहों से भर गया। गंधर्वों के दल गुणों का गान करने लगे।

Sō avasara biraṃci jaba jānā l Calē sakala sura sāji bimānā l l
Gagan bimal sakula sura jūthā l Gāvahiṃ gun gaṃdharb barūthā l l

When Brahma perceived that the time of Sri Rama's birth had approached, all the Demigods came out with their carriers (Vaahan) duly equipped. The bright heaven was crowded with their hosts and troops of Gandharvas chanted praises and rained down flowers placing them in their beautiful palms.

बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी । गहगहि गगन दुं दुभी बाजी ।।
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा । बहुबिध लावहिं निज निज सेवा ।।

गंधर्वों के दल सुंदर अंजलियों में सजा-सजाकर पुष्प बरसाने लगे। आकाश में घमाघम नगाड़े बजने लगे। नाग, मुनि और देवता स्तुति करने लगे और बहुत प्रकार से अपनी अपनी सेवा (उपहार) भेंट करने लगे।

Barașahiṃ sumana suaṃjali sājī ।
Gahagahi gagana duṃdubhī bājī ।।
Astuti karahiṃ nāga muni dēvā ।
Bhubidhi lāvahiṃ nija nija sēvā ।।

The Gandharvas rained down flowers placing them in their beautiful palms. The sky resounded with the beat of kettle drums. Nagas, Sages and Gods offered praises and tendered their services in manifold ways.

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ।।

दीनों पर दया करने वाले, कौसल्याजी के हितकारी कृपालु प्रभु प्रकट हुए। मुनियों के मन को हरने वाले उनके अद्भुत रूप का विचार करके माता हर्ष से भर गईं। नेत्रों को आनंद देने वाला मेघ के समान श्याम शरीर था। चारों भुजाओं में अपने (खास) आयुध (धारण किए हुए) थे। (दिव्य) आभूषण और वनमाला पहने थे। बड़े-बड़े नेत्र थे। इस प्रकार शोभा के समुद्र तथा खर राक्षस को मारने वाले भगवान प्रकट हुए।

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ।।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ।।

दोनों हाथ जोड़कर माता कहने लगीं, 'हे अनंत, मैं किस प्रकार तुम्हारी स्तुति करूँ। वेद और पुराण तुम को माया, गुण और ज्ञान से परे और परिमाण रहित बतलाते हैं। श्रुतियाँ और संतजन दया और सुख का समुद्र, सब गुणों का धाम कहकर जिनका गान करते हैं, वही भक्तों पर प्रेम करने वाले लक्ष्मीपति भगवान मेरे कल्याण के लिए प्रकट हुए हैं।'

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।।
उपजा ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।।

वेद कहते हैं कि तुम्हारे प्रत्येक रोम में माया के रचे हुए अनेकों ब्रह्माण्डों के समूह (भरे) हैं। वे तुम मेरे गर्भ में रहे, इस हँसी की बात के सुनने पर धीर (विवेकी) पुरुषों की बुद्धि भी स्थिर नहीं रहती (विचलित हो जाती है)। जब माता को ज्ञान उत्पन्न हुआ, तब प्रभु मुस्कुराए। वे बहुत प्रकार के चरित्र करना चाहते हैं। अतः उन्होंने (पूर्व जन्म की) सुंदर कथा कहकर माता को समझाया, जिससे उन्हें पुत्र का (वात्सल्य) प्रेम प्राप्त हो (भगवान के प्रति पुत्र भाव हो जाए)।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ।।

माता की वह बुद्धि बदल गई, तब वह फिर बोलीं , 'हे तात, यह रूप छोड़कर अत्यन्त प्रिय बाललीला करो, (मेरे लिए) यह सुख परम अनुपम होगा। माता का यह वचन सुनकर देवताओं के स्वामी सुजान भगवान ने बालक रूप होकर रोना शुरू कर दिया। (तुलसीदासजी कहते हैं) जो इस चरित्र का गान करते हैं, वे श्री हरि का पद पाते हैं और (फिर) संसार रूपी कूप में नहीं गिरते।

Bhaē pragaṭa kṛpālā dīnadayālā kausalyā hitakārī ।
Haraṣita mahatārī muni mana hārī adbhuta rūpa bicārī ।।
Lōcana abhirāmā tanu ghanasyāmā nija āyudha bhuja cārī ।
Bhūṣana banamālā nayana bisālā sōbhāsiṃdhu kharārī ।।
Kaha dui kara jōrī astute tōrī kēhi bidhi karauṃ anaṃtā ।
Māyā guna gyānātīta amānā bēda purana bhanaṃtā ।।
Karunā sukh sāgara sab gun āgara jēhi gāvahiṃ śruti saṃtā ।
Sō mama hita lāgī jana anurāgī bhayau pragaṭa śrīkaṃtā ।।
Brahmāṃḍa nikāyā nirmita māyā rōma rōma prati bēda kahe ।
Mam ura sō bāsī yaha upahāsī sunata dhīra pati thira na rahe ।।
Upajā jab gyānā prabhu musakānā carit bahut bidhi kīn kahe ।।
Kahi kathā suhāī mātu bujhāī jēhi prakāra suta prēma lahe ।।
Mātā puni bōlī sō mati ḍaulī tajahu tāta yaha rūpā ।
Kījai sisulīlā ati priyasīlā yaha sukha parama anūpā ।।
Suni bacana sujānā rōdana ṭhānā hōi bālaka surabhūpā ।
Yah carit jē gāvahi haripad pāvahṃ tē na parahiṃ bhavakūpā ।।

The gracious Lord, who is compassionate to everyone and the benefactor of Kausalya appeared. The thought of His marvellous form, which stole the hearts of the Sages, filled the mother with joy. His body was dark as a cloud which was the delight of all the eyes. In His four arms, He bore His characteristic emblems (a conch-shell, a discus, a club and a lotus). Adorned with jewels and a garland of sylvan flowers and endowed with large eyes, the slayer of the demon Khara was an ocean of beauty. Joining both her palms the mother said, "O infinite Lord, how can I praise You! The Vedas as well as the Puranas declare You as transcending Maya, beyond attributes, above knowledge and beyond all measure. He who is sung by the Vedas and holy men as an ocean of mercy and bliss and the repository of all virtues, the same Lord of Lakshmi, the lover of His devotees, has revealed Himself for my good. The Vedas proclaim that

every pore of Your body contains multitudes of Universes brought forth by Maya. That such a Lord stayed in my womb, this amusing story staggers the mind of even men of wisdom."

When the revelation came upon the mother, the Lord smiled. He would perform many a sportive act. Therefore, He exhorted her by telling her the charming account of her previous birth so that she might love Him as her own child. The mother's mind was changed. She spoke thus, "O Lord, give up this superhuman form and indulge in childish sports, which are so dear to a mother's heart. The joy that comes from such sports is unequalled in every way."

Hearing these words, the Lord of immortals became an infant and began to cry. Those who sing these verses, says Tulasi Das, will attain to the abode of Lord Vishnu and never fall into the well of mundane existence.

इस प्रकार भगवान् राम और उनके तीन भाईओं का जन्म हुआ। उनके अन्य तीन भाईओं के नाम भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न रखे गए।

Thus, Lord Ram was born with his three brothers. His other brothers were named as Bharat, Lakshman and Shatrughan.

श्री राम आरती

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ ।
आरती उतारूँ प्यारे तुमको मनाऊ ।।
अवध विहारी तेरी आरती उतारूँ ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ ।।

कनक सिंहासन विराजत जोड़ी ।
दशरथ नंदन जनक किशोरी ।।
युगुल छबि को सदा निहारूँ ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ ।।

बाम भाग शोभति जग जननी ।
चरण बिराजत है सुत अंजनी ।।
उन चरणों को सदा पखारू ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ ।।

आरती हनुमंत के मन भाये ।
राम कथा नित शिव जी गाये ।।
राम कथा हृदय में उतारू ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ ।।

चरणों से निकली गंगा प्यारी ।
वंदन करती दुनिया सारी ।।
उन चरणों में शीश नवाऊँ ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ ।।

Shri Ram Arti

Hey Raja Ram Teri Aarti Utaroon I
Aarti Utaroon Pyare Tumko Manon I I
Avadh Vihari Teri Aarti Utaroon I
Hey Raja Ram Teri Aarti Utaroon I I

Kanak Sinhashan Virajat Jodi I
Dashrath Nandan Janak Kishori I I
Yugal Chhavi Ko Sada Niharoon I
Hey Raja Ram Teri Aarti Utaroon I I

Baam Bhaag Shobhit Jag Janani I
Charan Viraajat Hein Sut Anjani I I
Un Charano Ko Sadaa Pakhaaroon I
Hey Raja Ram Teri Aarti Utaroon I I

Aarti Hanumant Ke Man Bhave I
Ram Katha Nit Shivji Gaave I I
Ram Katha Hridaya Mein Utaroon I
Hey Raja Ram Teri Aarti Utaroon I I

Charano Se Nikali Ganga Pyari I
Vandan Karati Duniya Saari I I
Un Charano Mein Sheesh Nawaoon I
Hey Raja Ram Teri Aarti Utaroon I I

OBJECTIVES OF SHRI RAM KATHA SANSTHAN PERTH (INC)

- Shri Ram Katha Sansthan Perth (Inc) is a Vaishnav non-profit religious organisation based on the principles established by Bhagwan Swami Shri Ramananda Ji Acharya (14th century).
- Shri Sansthan is non-discriminatory to any religion, caste, sex and social status of the devotees. Its main principle is, 'Hari Ko Bhaje, So Hari Ko Hoi', the one who worships the Lord, is dear to the Lord.
- Shri Sansthan believes that the worship of the Lord with pure heart and unselfish attitude is very dear to the Lord. All the devotees of the Lord are brothers and sisters.

Concept of Brahman (Supreme)

- Lord Ram, Mother Sita and their incarnations are the 'Supreme Brahman'. They are omnipresent and preserver of the Universe.

Concept of Jiva (Soul)

- The existence of Jiva (Soul) is dependent on Brahman. Lord Ram, Mother Sita and their incarnations (Brahman) are the means to achieve salvation (Moksha). Their eternal and omnipresence help Jiva to move forward towards the achievement of salvation (Moksha).

Concept of Maya (Illusion)

- Maya is the cause of Prakrati (Nature/ World). Prakrati is the combination of three Gunas (Qualities) - Sat, Raj and Tamas. By these three Guns, Prakrati creates the world. Maya is controlled by Brahman. Brahman (Lord Ram, Mother Sita and their incarnations) alone can provide salvation from Maya.

Concept of Moksha (Salvation)

- The abode of Lord Ram, Mother Sita and their incarnations is 'Saket-Dham'. By meditating and/or praying Lord Ram, Mother Sita and their incarnations, the devotees get salvation (Moksh) and never come back into this world. The cycle of birth and death is eradicated forever.
- Shri Sansthan continues to publish religious books, booklets, magazines etc to fulfil these objectives. Time to time, Shri Sansthan also organises Shri Ram Katha and other religious Kathaen of the great Sanatan Rishies, Mothers and great devotees.

डॉ यतेंद्र शर्मा - सन १९५३ में एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

कार्यालय: ३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट: https://shriramkatha.org
ई-मेल: srkperth@outlook.com
टेलीफोन: +६१ (०८) ९४०१ १५४३

Dr. Yatendra Sharma, the compiler of this book, was born in a Sanatan Dharma Hindu family. Following his family traditions, he developed an interest in reading, listening, and narrating religious scriptures since his childhood. He learnt Sanskrit in his childhood from his grandfather Shri Bhagwan Das Ji and Shri Saligram Sharma Agnihotri Ji, the great scholar of Sanskrit and retired Principal of Naravar Sanskrit Mahavidyalay. He completed his Doctorate in Chemical Technology from the Technical University of Graz, Austria, and now serving the mining and mineral industry of Western Australia for more than three decades.

In 2016, with the help of some like-minded friends, he founded a religious organisation 'Shri Ram Katha Sansthan Perth', based on the teachings of Bhagwan Swami Ramananad Ji Acharya Maharaj, and following the traditions of 'Shri Ramanand Sampraday'. 'Shri Ram Katha Sansthan Perth' is continually publishing books and booklets on the life stories of the great Sanatan Dharma Saints, Mothers, patriotic Shris, etc, to create awareness about the Sanatan Dharma culture to the followers of Sanatan Dharma.

Shri Ram Katha Sansthan Perth (Inc)
35 Mayena Retreat, Hillarys,
WA 6025, Australia

Website: https://shriramkatha.org
Email: srkperth@outlook.com
Telephone: +61 (08) 9401 1543